ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०८२ सितम्बर २०२५

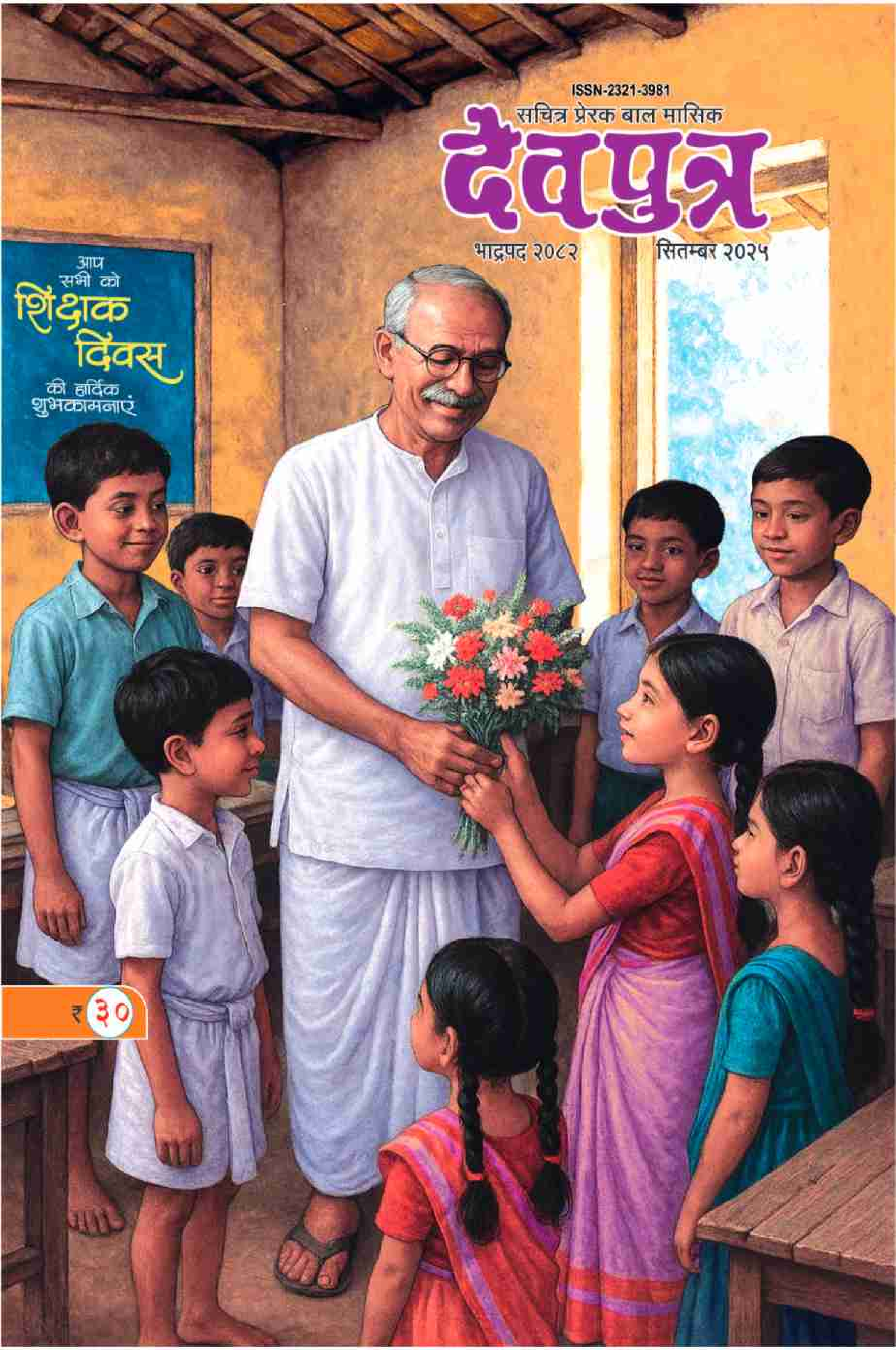

₹ ३०

पितांबरी®
रुचियाना™
द रिच टेस्ट!
छोटी-छोटी भूख का मीठा-मीठा पार्टनर!
Pitambari®
Ruchiyana™
The Rich Taste!
Jaggery Powder
500 g
Hygienically Produced
Sweet & Delicious
Scan me to watch Jaggery recipes
लड्डू, चिक्की, पैनकेक्स, कुकीज जैसे अपने पसंदीदा स्नैक्स में चिनी की जगह गुड़ का इस्तेमाल करने से यह स्नैक्स मीठे, स्वादिष्ट और हेल्दी बनते है।
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599,
South: 6366932555, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314.
Scan
To Shop

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

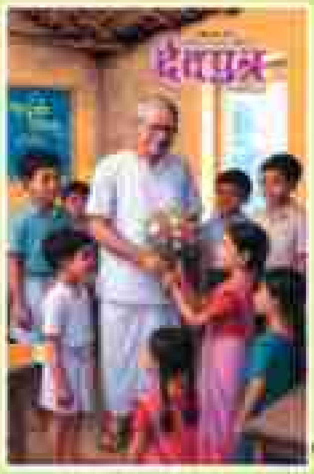

भाद्रपद	२०८२	वर्ष	४६
सितम्बर	२०२५	अंक	३

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक :	३० रुपये
वार्षिक :	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय :	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक :	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

एक कहानी बताता हूँ। शाला से लौटते ही श्याम ने देखा जीन्स-टॉप पहने कोई महिला दर्पण के आगे खड़ी है। यह हमारे घर में कौन आया है! वह 'माँ-माँ' की पुकार करते हुए रसोई में भागा। तभी बाहर के कमरे से उसे माँ की आवाज सुनाई दी- ''अरे! मैं इधर हूँ अन्दर नहीं।'' श्याम पलटा, बाहर देखा। माँ कहीं न दिखी वह परेशान होकर ढूँढ रहा था तभी वह महिला खिलखिलाकर हँसते हुए पलटी ''क्यों रे! अपनी माँ को नहीं पहचाना?'' ''एँ! यह क्या पहना है तुमने?'' हमेशा साड़ी में दिखने वाली माँ को वह जीन्स-टॉप में स्वीकार नहीं कर पा रहा था। माँ बोली- ''क्यों मैं यह नहीं पहन सकती क्या? नया जमाना है।'' वह बोला- ''होने दो नया जमाने को पर मेरी माँ मुझे अपने ही ढंग से अपनी लगेगी चाहे जैसे नहीं?'' माँ ने कहा- ''ऐसा है क्या? अच्छा जरा मेरा मोबाइल देना।''

श्याम मोबाइल लाया तो माँ ने श्याम का ही किया हुआ वाट्सएप सन्देश दिखाया- ''Maa aaj Thodi der se aaunga.'' यह क्या है? ''माँ! मैं थोड़ी देर से आने वाला था सोचा आपको बता दूँ।'' वह समझा नहीं माँ क्या पूछ रही है। माँ ने कहा- ''यह कौनसी भाषा है?'' ''हिन्दी'' ''इसमें अ. आ. ई. तो है नहीं कहीं?'' ओह! अब समझा आप कह रहीं थी कि यह देवनागरी में क्यों नहीं लिखा। माँ क्या है न, यह सरल पड़ता है। नए जमाने का नवाचार है।'' यह नवाचार नहीं है जैसे तुम्हारी माँ तुम्हें साड़ी में ही अच्छी लगती है वैसे ही हिन्दी भाषा भी तो तुम्हारी भाषा माँ है। इसे देवनागरी में ही लिखना चाहिए।'' श्याम को तो उसकी गलती समझ में आ गई, आपको भी आई क्या? लिपि भाषा का अभिन्न अंग है देशी चोंच विलायती दाना अच्छा नहीं लगता। नवाचार अच्छा है पर वह सहजता समाप्त कर दे तो अत्याचार बन जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवाचार परंपरा को बढ़ाने वाला होना चाहिए न कि उसे नष्ट कर देने वाला।

जहाँ गंगा का जल नल से घर में आता है वहाँ पर भी उसमें नहाते हुए गंगा स्नान का अनुभव नहीं होता ऐसा ही सूक्ष्म अंतर हमें मातृ भाषा प्रयोग में भी अनुभव करना आवश्यक है।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- पुराना बस्ता -प्रीतमसिंह १४
- हम सब साथ हैं -पवनकुमार वर्मा २८
- मेहनत हुई सफल -डॉ. के. रानी १६
- ओजोन हमें बचाना है -अंकुश्री ३८

छोटी कहानी

- शिक्षक दिवस -पूनम पाण्डे ०५
- जादुई काँच -डॉ. सुनीता फड़नीस ०७

लघुकथा

- पढ़ने का शौक -पावनी पाण्डे ५०

आलेख

- हिन्दी हिन्द देश की..... -सांवलाराम नामा ३६

अनुवाद

- सात चकुली चौदह चें मूल उड़िया-भावेशचंद्र कॅर अनुवाद-डॉ. रश्मि वार्ष्णेय ३२

प्रेरक प्रसंग

- नियम पालन -गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ३४
- हिन्दी की शक्ति -श्याम सुन्दर 'सुमन' ४६

कविता

- हिन्दी सब उन्नति को मूल -राजा चौरसिया ०९
- चिड़िया बन उड़ती -विष्णु शर्मा 'हरिहर' ३१
- हिन्दी शान हमारी -लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ३४
- बंटी बंदर की परेशानी -डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ५१

स्तंभ

- छः अँगुल मुस्कान - ०८
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १०
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल १८
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ३०
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३५
- आपकी पाती - ४१
- पुस्तक परिचय - ४५
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४८

बौद्धिक क्रीडा

- पहेलियाँ -डॉ. जितेन्द्र 'जीत'..... ०६
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी २०
- क्या गायब -संकेत गोस्वामी ४२

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका के..... -संकेत गोस्वामी १३
- माता और महिषासुर -संकेत गोस्वामी २१
- राम का उपहार -देवांशु वत्स ४४

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास बैंक - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक- **38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

छोटी कहानी – शिक्षक दिवस : ५ सितम्बर

शिक्षक दिवस

– पूनम पांडे

आज तो शाला की रंगत ही निराली थी। सुबह की चंपई किरण ने हर बच्चे की धुली–धुली नजर को जगमगा दिया था। सूरज दरवाजे पर खड़ा था और अपना गणवेश पहने बच्चे खिले–खिले हुए थे। होते भी क्यों नहीं, आज शिक्षक दिवस जो था, और यह तो विद्यालय के किसी भी शिक्षक ने अपने किसी विद्यार्थी को इस बात के लिए नहीं उकसाया कि तुमको शिक्षक दिवस मनाना ही होगा। पर सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जी की जयंती मनाने की बात हर कक्षा में हुई।

बच्चे तो दोनों ही दिवस मनाने को तरंगित थे। कुछ बच्चों ने तो एक महीना पहले से ही खाली कालांश में समय निकालकर कार्ड तैयार कर दिए थे।

कक्षा में दक्ष कुछ बच्चों ने तो कागज को रंगीन करके दुरंगे–तिरंगे गुलाब बना रखे थे। सबने अपने शिक्षक को चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। सब बहुत भावुक हो रहे थे। वास्तव में आज शिक्षक दिवस के छोटे–से आयोजन में जो भी था सब सार्थक और सारगर्भित था। बच्चे कविता, संस्मरण, गीत आदि सुना कर अपने स्थान पर आसीन हो गए थे कि एक युवक मंच की ओर आता हुआ दिखाई दिया।

अरे! यह तो हमारे ही विद्यालय का पाँच वर्ष पुराना छात्र। ''आओ नवीन आओ।'' कहकर प्राचार्य ने उसको माइक पर संबोधित करके बुलाया।

नवीन से सबसे पहले प्राचार्य को प्रणाम किया उसके बाद एक–एक कर प्रत्येक अध्यापक को प्रणाम किया।

उधर दर्शक दीर्घा में हर बच्चे को लड्डू और पेठा मिल चुका था। सब आनंदित थे कि नवीन ने माइक पर आकर दो शब्द कहने की अनुमति माँगी। प्राचार्य ने हँसकर तुरंत अनुमति दे दी। नवीन ने कहा कि मैं दूर गाँव से आता था। मेरे लिए यह विद्यालय और समस्त शिक्षक ईश्वर का रूप हैं। ऐसा बोलते

हुए, नवीन के नयनों से अथाह सम्मान झलक रहा था। एक बरगद की छाया में जो शांति और आराम मिलता है वही सुख मुझे हर अध्यापक से मिला। वैसे आपको सच बताऊँ मैं बस कुछ पढ़ने-लिखने के लिए शाला आता था। सोचता था कि बस साक्षर हो जाऊँ। पर अपने विद्यालय से तो मुझे शिक्षा ही नहीं प्रतिदिन जीने की अच्छी बातें, सहायता करने की आदत, अनुशासन, नियमित जीवन, प्रकृति प्रेम सब सीखने को मिल गया।

''अरे नवीन! इसके लिए सरकार वेतन देती है और उच्च शिक्षा इसीलिए तो प्राप्त की है कि छात्रों को पढ़ा लिखा सके।'' एक शिक्षक ने कहा तो नवीन ने विन्रमता से उत्तर दिया कि गुरुवर आपकी शिक्षा दीक्षा से अधिक आपकी सहनशीलता के लिए आप सबको प्रणाम करता हूँ। हम विद्यार्थी तो बादल बिजली बनकर गला फाडकर चीखते, हँसते, पर आप सब हमको कितने धैर्य से समझाते थे। हम सबके शोर-शराबे से आपको हर पल चुनौती मिलती पर आप तो सचमुच दिव्य गुरुजन है। आप सबके इस व्यवहार से मैंने दिनचर्या में एक और व्याकरण सीखा। अब मैं भी शिक्षक बनने जा रहा हूँ। इसलिए आपको प्रणाम करने उपस्थित हूँ।''

नवीन के उद्गार एकदम सच्चे मन से निकले थे। सबने उसे खूब आशीर्वाद दिया। हर बच्चे ने संकल्प लिया कि हम भी नवीन भैया जैसे योग्य बनकर दिखाएँगे।

- अजमेर (राजस्थान)

बौद्धिक क्रीडा

पहेलियाँ

- डॉ. जितेन्द्र 'जीत' भागड़कर

(१)
रखवाली करने दरवाजे पर
सदा ही बैठा रहता।
ऐंठी पूँछ सदा रहती है
कभी न होता सीधा।
जग ने पाठ वफादारी का
है इसी से सीखा।
बूझो किसके पास है यह
कर्त्तव्यों की शिक्षा।

(२)
अमीर-गरीब सबके घर रहता
जीवन-चलता जब यह जलता।
न जले तो अमीर भी मरता
बताओ जग इसे क्या कहता।।

(३)
एक चीज ऐसी
जिससे खुले खजाना।
अपना अक्ल लड़ा
नाम इसका बताना।।

- बालाघाट (म. प्र.)

उत्तर- १) कुत्ता। २) पेट्रोल। ३) चाबी।

जादुई काँच

– डॉ. सुनीता फड़नीस

विहान रोबोट चलित कार से शाला की ओर जा रहा था। रोबोट ने उसे शाला के गेट पर छोड़ दिया। आसपास हवा नहीं चल रही थी। शाला के रास्ते में कोई हरा भरा पेड़ भी नहीं था। विहान की पीठ पर बस्ता नहीं, एक ऑक्सीजन सिलेंडर जिससे निकली हुई नली, उसकी नाक पर बंधी रहती थी। उसी से वह साँस लेता था। केवल विहान ही नहीं, शाला के सभी बच्चों ने ऐसे सिलेंडर अपनी पीठों पर लाद रखे थे। उनके शहर में एक भी पेड़ नहीं बचा था। जिससे न फूल खिलते थे, न फल लगते थे।

सबके हाथों में शाला का बस्ता था जिसमें पानी पीने की बॉटल थीं। उनके घर नल से नहीं, पानी बनाने की मशीन से पानी बनता था। बस्त में पुस्तकें नहीं, आईपैड या लैपटॉप्स थे। उसे पेन–पेंसिल से कॉपी पर लिखना भी नहीं आता था। उसे आँखों पर मोटा चश्मा लगाना पड़ता था।

विहान धीरे–धीरे चला जा रहा था कि उसके पैर से, एक सुंदर–सा काँच का टुकड़ा टकरा गया। कौतूहल से उसने उठा लिया और आँख के सामने लाकर देखने लगा।

उसने देखा– बर्फ से टँके हुए कुछ सुंदर–श्वेत पर्वत, पर्वतों से नीचे हरी–भरी तराई जहाँ पर हरी फसलें और कई प्रकार के पेड़ उगे हुए थे। विहान इस सुंदर नयनाभिराम दृश्य को देख बहुत प्रसन्न हुआ।

उसने पीछे मुड़कर काँच से देखा तो क्या देखा है– एक बड़ा–सा खेत था, जिसमें गेहूँ की फसल लहलहा रही थी। एक बड़े से आम के पेड़ के नीचे आरामदायक खटिया पर उसके दादाजी लेटे हुए थे। मंद हवा बह रही थी। पास ही एक तालाब में ढेर सारा पानी भरा था।

''अरे यह कौन? ये तो उसके पिताजी दिख रहे हैं।''

उनकी पीठ पर कोई सिलेंडर नहीं था। वे तो सीधे कुएँ से पानी पी रहे थे। पानी से खेल रहे थे। उसके जैसी कोई बोतल नहीं थी, उनके पास। इतने में दादाजी उठे और सब बच्चों को उन्होंने आम दिया। सबने खूब आम खाए।

विहान ने तो आग केवल चित्र में देखे हैं। माँ हमेशा फ्रिज में रखे हुए आम के टुकड़े या पल्प खिलाती है। घर पर रोटी मशीन से बनती है। दादी

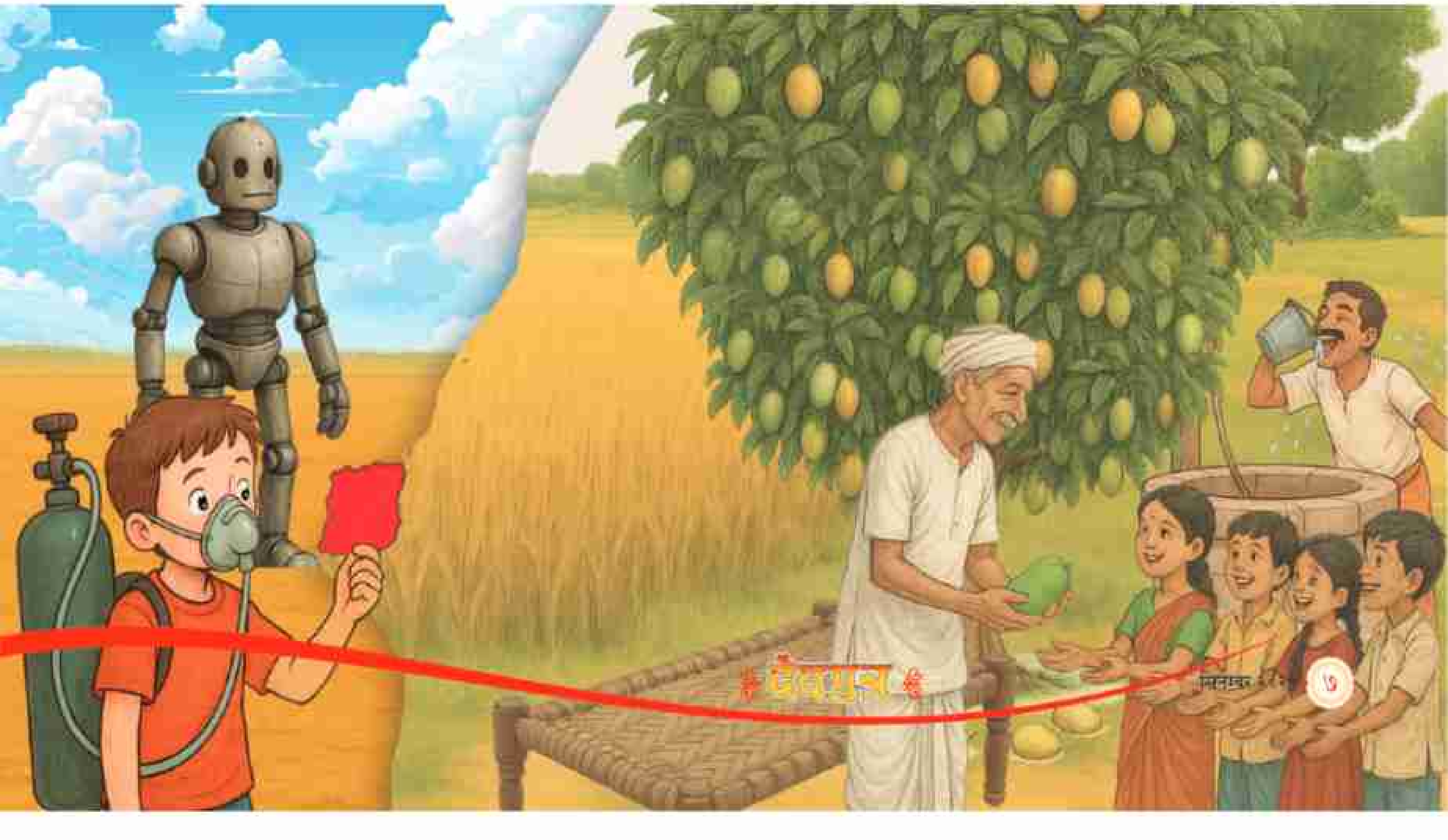

चूल्हे पर रोटी बनाती और बच्चों को खिला रही थी।

विहान जिस भी दिशा में काँच घूमाता, उसे नए-नए दृश्य दिखते! हरियाली, फलों से लदे पेड़-पौधे, रंग-रंगीले फूल, जंगल, उसमें स्वच्छंद घूमते जानवर दिखाई दे रहे थे। वह आश्चर्य से देखने लगा- जानवर और पौधे तो वह केवल टीवी में देखता है।

विहान सोच में पड़ गया और उसने घर जाकर काफी देर, इस बारे में पढ़ाई की और समझ गया कि मानव ने कैसे पर्यावरण नष्ट कर दिया है।

जादुई काँच के बारे में पिताजी को बताया। फिर पूछा- ''पिताजी! क्या हम आँगन में कुछ पेड़ पौधे उगा सकते हैं?'' और कुछ चिड़ियों को लाकर उन्हें दाना खिला सकते हैं?

पिताजी विहान के मन की बात समझ गए। दूसरे दिन रविवार को उन्होंने कुछ बीज बाजार से लाकर आँगन में बो दिए। विहान को मानो एक नया काम मिल गया। वह रोज पानी डालकर पौधों के उगने की प्रतीक्षा करता। अब धीरे-धीरे बीजों से छोटे-छोटे पौधे उगने लगे। आँगन में वह अब पीठ पर सिलेंडर भी नहीं रखता। पौधों के पास ही जाकर सुकून से साँस लेता।

- इन्दौर (म. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

फिल्म चल रही थी कि दो महिलाओं ने आपस में बातचीत शुरू कर दी। इससे पास बैठे दर्शकों को संवाद नहीं सुनाई दे रहा था।

एक दर्शक उस महिला से बोला- ''हमें कुछ सुनाई नहीं दे रहा।''

महिला- ''हम दोनों प्राइवेट बात कर रहे हैं, आपको क्यों सुनाऊँ?''

*****

साक्षात्कार में एक अभिनेत्री ने बताया- ''मैं न सिगरेट पीती हूँ न शराब। मुझे कोई गलत आदत भी नहीं है।''

''आप में कोई न कोई दुर्गुण तो अवश्य होगा?'' अगला प्रश्न पूछा गया।

''हाँ! बस मैं झूठ बहुत बोलती हूँ।''

*****

एक ग्रामीण ने अपने मित्र से पूछा- 'जब तुम्हारी बकरी के पेट में दर्द हुआ था तो तुमने उसे क्या पिलाया था?'

मित्र- 'केवल अरंडी का तेल ही पिलाया था। कुछ दिनों के बाद दोनों मित्र फिर मिलते हैं। ग्रामीण अपने मित्र को बताता है- 'मैंने भी अपनी बकरी को अरंडी का तेल पिलाया, पर वह तो मर गई।'

मित्र- मेरी बकरी के साथ भी ऐसा हुआ था।

*****

जूते बनाने वाली एक कंपनी के सफल निदेशक से एक पत्रकार ने पूछा- ''आपकी सफलता का रहस्य क्या है?''

निदेशक- ''सही निर्णयों पर काम करना।''

पत्रकार- ''आप सही निर्णय लेते किस प्रकार हैं?''

निदेशक- ''अनुभवों के आधार पर।''

पत्रकार- ''आप अनुभव किस प्रकार प्राप्त करते हैं?''

''गलत निर्णयों पर काम करके।'' उसे उत्तर मिला। -

हिन्दी सब उन्नति को मूल

– राजा चौरसिया

फूल और फल रही विश्व में
आत्मीयता की परिभाषा।
सब उन्नति का मूल रहे यह
भारतेन्दु जी की अभिलाषा।।

पूर्व संस्कृति तथा हमारे
संस्कार की महतारी है।
भारतीयता के ही कारण
सभी बोलियों को प्यारी है।।

जड़ स्वरूप आधार हमारे
सारे जीवन की कहलाए।
वसुधा तो कुटुम्ब जैसी है
बावन वर्णों से समझाए।।

लेकिन बेटे भूल रहे हैं
माँ के प्रति कर्त्तव्य निभाना।
आहत, यह कर रही कहावत
'देशी चोंच विदेशी दाना'।।

अपनी यही मातृभाषा है
इसे मात्र भाषा ना मानें।
सारस्वत महिमा, गरिमा की
अमर धरोहर को पहिचानें।।

अमिधा, लक्षणा और व्यंजना
रहे त्रिवेणी–संगम गाथा।
कितनी अविरल सरल, तरल है
सुन–गुनकर झुक जाए माथा।।

जुड़ी हिन्द से अपनी हिन्दी
स्वर इसके घर–घर पहुँचाओ।
जो भविष्य ज्योतिर्मय कर दे
बच्चों को वह राह दिखाओ।।

– उमरियापान (म. प्र.)

नटखट बाल कहानियों की लेखिका : शिवानी

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

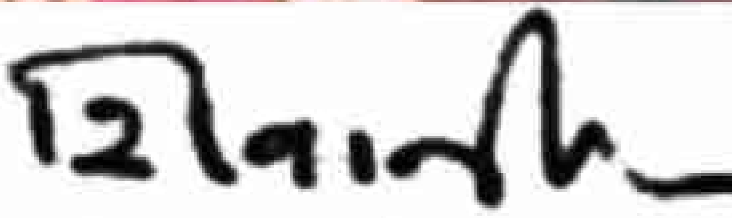

साहित्य सृजन हेतु पद्मश्री उपाधि से सम्मानित हिंदी की लोकप्रिय लेखिका शिवानी ने बच्चों के लिए भी अत्यंत रोचक, प्रेरक और मनोरंजक कहानियों का सृजन किया। उनकी लेखनी में लोकानुरंजन है जो बरबस ही बच्चों को गुदगुदाता है। साथ ही उन्हें चैतन्य नागरिक के रूप में भी तैयार करने की क्षमता रखता है। उन्हें नई दृष्टि भी देता है। सूझ–बूझ भी। एक अच्छे बाल साहित्य की यही विशेषता होती है, जो उनकी कहानियों में सहज ही विद्यमान है। बड़ों में वे दीदी के नाम से विख्यात थीं। जो बच्चे उनके बाल साहित्य से जुड़ेंगे, वे उन्हें निश्चित रूप से कहानी वाली दादी कहेंगे।

१७ अक्टूबर, वर्ष १९२३ को गुजरात के राजकोट में अश्विनी कुमार पांडेय और लीलावती की तीसरी बिटिया के रूप में जन्मीं शिवानी के बचपन का नाम गौरा था। लेखन के लिए शिवानी नाम उन्होंने स्वयं रखा। मूलरूप से उत्तर प्रदेश के कुमाऊँ क्षेत्र के उनके पिता प्रिंसेज कॉलेज, राजकोट के प्राचार्य थे और माता गुजराती भाषा की विदुषी। शिवानी जी की शिक्षा गुरुदेव टैगोर जी के शांति निकेतन में हुई। यही कारण था कि मिली–जुली संस्कृति के फलस्वरूप हिंदी, कुमाउनी, संस्कृत, गुजराती, बांग्ला और अँग्रेजी जैसी भाषाओं पर उनका सहज अधिकार था।

शिवानी की पहली बाल कहानी १९३५ में हिंदी बाल पत्रिका 'नटखट' में प्रकाशित हुई थी। तब वे मात्र बारह वर्ष की थीं। उनकी कहानियाँ भी बड़ी ही नटखट अंदाज में ही लिखी गईं हैं। उनकी बहुत–सी बाल कहानियों में काव्यात्मक संवादों का प्रयोग किया गया है। बच्चों को कहानी की यह शैली बहुत पसंद आती है।

शिवानी जी की बाल कहानियों की पुस्तकों में सूखा गुलाब, राधिका सुन्दरी, बिल्ली और मूसा रानी, स्वामिभक्त चूहा प्रमुख हैं।

वे बड़ों की लोकप्रिय लेखिका थीं। उनके कथा साहित्य में नारी विमर्श और लोक–संस्कृति की अमिट छाप देखने को मिलती है। कृष्णकली, चल खुसरो घर आपने, शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ, आमादेर शान्तिनिकेतन, सुनहुँ तात यह अमर कहानी आदि उनकी बड़ों की चर्चित पुस्तकें हैं। उनकी अनेक कृतियों पर फिल्म और टीवी धारावाहिक बन चुके हैं। उनकी सुपुत्री मृणाल पांडेय भी हिंदी की प्रख्यात लेखिका हैं, जो बाल पत्रिका नंदन की सम्पादक भी रहीं हैं।

शिवानी जी आजीवन लिखती रहीं। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय लखनऊ में बिताया। २१ मार्च २००३ को उनका निधन हो गया। आइए, पढ़ते हैं उनकी एक बड़ी रोचक और लोमहर्षक कहानी।

बुद्धिमान बकरी

नेपाल की तराई जंगली जानवरों का खजाना है। बड़े-बड़े शेर, चीते, हाथी अपनी गर्जना और चिंघाड़ों से, बड़े-बड़े वीर शिकारियों के छक्के छुड़ा देते हैं।

ऐसे ही बीहड़ जंगल में एक सीधी बुढ़िया बकरी भी रहती थी। कभी उसके सींगों की सुन्दरता पर शेर-चीते भी मरते थे। उसकी रेशम-सी मुलायम पूँछ पर मखमली बालों का गुच्छा था जिसकी घुंघराली, सुनहरी लटें अब बुढ़ापे में सूखे गुलाब की पँखुड़ियों की तरह झड़ने लगी थीं। दाँत टूट गए थे और दिन-रात की खाँसी से बेचारी खवक-खवक कर इधर-उधर लावारिस घूमती थी। उसके बीस पुत्र-पुत्रियों और चालीस नाती-पोतों में से एक भी उसकी सुधि नहीं लेता था। कष्टों के कारण जीवन से विरक्त होकर वह घने जंगल में किसी छायादार पेड़ के नीचे बैठकर नित्य प्रति राम का नाम जपती और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहती- ''हे राम जी! अब संसार से मुझे उठा लो।''

एक दिन वह पेड़ के नीचे बैठी, नित्य के नियमानुसार भजन गा रही थी कि भयंकर शेर की गर्जना से पेड़ काँप उठे। बेचारी बकरी संभली भी नहीं थी कि सामने अँगारे-सी आँखें दहकाते स्वयं वनाधीश शेर बब्बर खड़े थे। बकरी ने बड़ी शांति से उठकर उनको प्रणाम किया और सिर झुकाकर बोली- ''महाराज! आज्ञा हो। पहले मेरे पेट से अपना भोजन आरम्भ कीजिए जिससे ये निगोड़े सींग आपके नाजुक गले में न अटक जाएँ।''

शेर बब्बर बड़े अचरज में पड़ गया। कहाँ की में-में और भाग-दौड़। किसका डर और किसका रोना-चिल्लाना। यह बूढ़ी बकरी ऐसी निर्भयता से कह रही है कि पहले मेरा पेट खाइए। शेर बब्बर महाराज कुछ और न मिलने पर ही बकरी पर हाथ उठाते थे। बकरी और खरगोश से डरपोक जीव उन्हें जरा भी पसंद नहीं थे। पर यह तो न्यारी ही बकरी थी। बब्बर ने मूँछें नीची कर लीं। पूँछ जमीन से लगाकर स्वर की गर्जन पोंछ-पाँछ कर मीठे स्वर में बोले-

''बहन बकरी! तुम्हारा साहस देखकर हम आज बड़े प्रसन्न हैं। इस बीहड़ जंगल का एक भी जानवर मैंने नहीं देखा जो मेरी गर्जना से काँप न गया हो। पर बहन! कृपा कर मुझसे कहो– ''तुम्हारे इस अद्‌भुत साहस का रहस्य क्या है? किस कुल का मुँह उज्ज्वल किया है तुमने?''

अपनी प्रशंसा सुनकर उसकी आँखें आँसू से भर गईं, ''महाराज! आसन ग्रहण कीजिए, मुझ अभागिनी की कहानी थोड़ी लंबी है।''

शेर बब्बर ने टूटे पेड़ पर आसन ग्रहण किया। बकरी ने एक लंबी साँस खींचकर कहानी आरम्भ की, ''महाराज! मेरे पिता को तिब्बत के प्रसिद्ध सौदागर सुपत्ता संगपिंग के बाजार से लाए थे। पिताजी के सींग ऐसे तीखे और पैने थे और उनका साहस ऐसा था महाराज कि एक बार जंगल में शेर से मुठभेड़ होने पर, शेर का पेट अपने सीगों से चीरकर उन्होंने अपने मालिक के प्राणों की रक्षा की थी। मेरी माँ थीं, कुमायूँ की परम सुन्दरी। उनके रूप पर रीझ कर ही तिब्बती–सौदागर उन्हें मेले से खरीद लाए थे और पिताजी से उनका ब्याह कर दिया था। मुझे बड़ी होने पर नेपाल के एक प्रसिद्ध सौदागर खरीद लाए। मैं जब तक जवान थी, उन्होंने मुझे बड़े प्यार से रखा। गाय–भैंसों की भाँति मैं बिनौले का नाश्ता करती और अपने मालिक को मीठे दूध से छका–छका देती।

ऐसा मीठा दूध था मेरा महाराज! कि 'चीनी या बताशा भी नहीं डालना' कहते थे मेरे मालिक और उनके बच्चे। पर समय जाने में देर नहीं लगती। मैं बूढ़ी होने लगी और दो बरस से मेरा दूध भी इन्हीं दुखों को झेल–झेलकर बिलकुल ही सूख गया है। इसी से मेरे मालिक सुबह होते ही मुझे जंगलों में चरने को हाँक देते हैं। मनुष्य की जाति बड़ी निष्ठुर होती है महाराज! कल रात मालिक कह रहे थे– 'सुनती हो, कल कुछ मेहमान आ रहे हैं, इस बकरी को काट–कूटकर पका देंगे।' सो आज शाम को स्वार्थी मनुष्य के हाथों मरने से क्यों न वन के वीर राजा के हाथों मरूँ। यही सोचकर मैं निर्भय होकर आपके पास खड़ी रही। आप प्रसन्नता से मुझे खाइए, प्रभु!'' कहकर दीन बकरी ने शेर के सामने घुटने टेककर गर्दन झुका दी।

शेर की आँखों में आँसू आ गए। उसने लपककर बकरी का माथा चूम लिया और उसे गले लगाकर बोला– ''बहिन! आँसू पोंछ और उठ जा, आज से तू मेरी बहिन और मैं तेरा भाई। किसी कि क्या हिम्मत जो तुझे छेड़े।''

अब तो बकरी उस दिन से शेर के पीछे–पीछे घूमती रहती। एक हाथी उसके लिए सूँड़ से उठा–उठाकर गन्ने, चिकनी पत्तियाँ और फल लेकर आता। जब तक बकरी जीवित रही, शेर ने बड़े प्रेम से उसकी सेवा की।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

शिक्षक

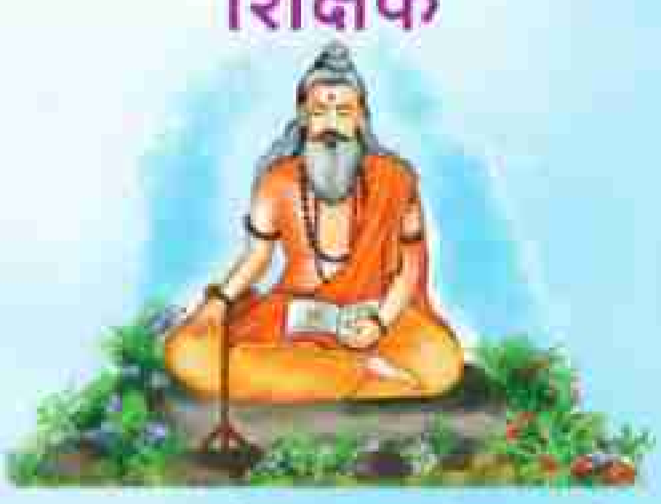

विद्वत्त्वं दक्षता शीलं संक्रान्तिरनुशीलनम्।
शिक्षकस्य गुणा: सप्त सचेतत्वं प्रसन्नता।।

(विद्वत्ता, निपुणता, चारित्र्य, ज्ञान को शिष्य में संक्रमण करने की सामर्थ्य, नियमित अध्ययन; जागरूकता और प्रसन्नता ये शिक्षक के सात प्रमुख गुण हैं।)

प्रेरक: सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडैते गुरव:स्मृता:।।

(प्रेरणा देने वाला, सूचना देने वाला, बोलकर बताने वाला, दिखाने वाला, शिक्षा देने वाला और बोध कराने वाला ये छ: लोग गुरु समान होते हैं।)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

पुराना बस्ता

– प्रीतम सिंह

सुदर्शनपुर गाँव में मोहन नाम का लड़का रहता था। वह चौथी कक्षा में पढ़ता था और थोड़ा जिद्दी स्वभाव का था। उसके पिता मिट्टी के खिलौने बनाते थे जिन्हें पास ही के नगर में बेचकर वे अपनी आजीविका चलाते थे। एक दिन विद्यालय में मोहन का बस्ता एक स्थान से थोड़ा-सा फट गया। जब वह घर लौटा तो उसने अपनी माँ को बस्ता दिखाते हुए कहा–

''माँ! देखो, आज मेरा बस्ता फट गया है। अब मुझे नया बस्ता चाहिए। कितने दिनों से इसी पुराने बस्ते को विद्यालय ले जा रहा हूँ।''

इस पर उसकी माँ बोली– ''बेटा! अभी ये बस्ता कुछ दिन और चल सकता है। ला, मैं इसे सिल देती हूँ।''

मोहन फिर बोला– ''पर माँ! मेरी कक्षा के सब बच्चों ने नया बस्ता ले लिया है। मुझे कुछ नहीं पता बस मुझे नया बस्ता चाहिए।''

''ठीक है आज तेरे पिताजी से कह दूँगी।'' इतना कहकर माँ ने उसका बस्ता सिलकर नया कर दिया।

वर्षा ऋतु का समय चल रहा था। कभी सुबह तो कभी शाम को वर्षा हो जाती थी। अगले दिन शाम को मोहन ने अपने पिताजी से नया बस्ता लाने का कहा। फिर उसके पिताजी बोले–

''कुछ दिनों बाद ला दूँगा बेटा! अभी ठीक से खिलौने नहीं बिक रहे हैं और कुछ तो वर्षा में भीगकर खराब हो जाते हैं तो अभी वैसे ही पैसे नहीं है। एक बार ये ऋतु चली जाए फिर देखते हैं।''

यह सुनकर मोहन मन ही मन उदास हो गया। इसी क्रम में तीन चार दिन निकल गए। प्रतिदिन मोहन शाला से घर आकर बस्ता लाने की जिद करने लगा। फिर एक दिन जब वह शाला से लौट रहा था तो उसकी दृष्टि तालाब पर पड़ी जो वर्षा जल से लबालब भर चुका था। पहले उसने कुछ सोचा फिर अपने आप से बोला– ''अभी इस बस्ते को तालाब में फेंक देता हूँ और माँ से कह दूँगा बस्ता पूरा फट गया था।''

फिर उसने ऐसा ही किया और घर आकर अपनी माँ से झूठ बोल दिया। माँ ने भी उसकी बात मान ली।

शाम को जोरों से वर्षा होने लगी। जो दो-तीन घंटे जमकर बरसी। मोहन के पिताजी अभी तक घर नहीं लौटे थे। मोहन और उसकी माँ उनकी राह देख रहे थे। जब वर्षा रुक गई तब वे घर पहुँचे। उन्होंने

कपड़े बदले। माँ खाने की तैयारी करने लगी। उसी समय मोहन ने अपने पिताजी से अपना नया बस्ता लाने को कहा। यह सुनते ही पिताजी उस पर बरस पड़े– ''चुप कर कितने दिनों से नए बस्ते की रट लगा रखी है तूने।''

माँ झट से दौड़कर आई, ''क्या हुआ? क्यों डाँट रहे हो इसे?''

''तो क्या करूँ? जरा पूछो तो कि इसका बस्ता कहाँ है?''

माँ ने प्रश्नांकित दृष्टि से मोहन की ओर देखा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था।

पिताजी निरंतर बोले जा रहे थे– ''इसके लिए नया बस्ता ले लिया था आज मैंने, घर लौट ही रहा था

कि गाँव के रास्ते पर अँधेरा होने के कारण से मेरा पैर फिसला और मैं तालाब में गिर पड़ा। नया बस्ता तुरंत मेरे हाथ से छूटकर बह गया, मैं हाथ–पैर मारने लगा, भगवान का शुक्र है कि तभी एक कपड़े की रस्सी मेरे हाथ में आ गई, जिसके सहारे मैं तालाब के किनारे आ सका। वह रस्सी वहीं पड़े पेड़ के कटे तने में अटकी थी। मैंने जोर से खींचा तो मोहन का बस्ता निकला। बोल मोहन तू ही फेंककर आया था न?''

माँ को पूरी बात समझ आ चुकी थी। मोहन चुपचाप बस आँसू टपकाता रहा।

''देख आज तेरे उसी फटे–पुराने बस्ते के कारण मेरी जान बची है। कल को जब मैं और तेरी माँ बूढ़े हो जाएँगे तब तू हमें भी ऐसे ही फेंक आएगा।'' पिताजी उसे समझाने लगे।

फिर मोहन धीरे से इतना ही बोल पाया– ''मुझे क्षमा कर दीजिए पिताजी! आगे से ऐसी कोई भी जिद नहीं करूँगा।''

कुछ देर बाद उसके पिताजी दरवाजे के बाहर रखा पुराना बस्ता अंदर ले आए।

अगले दिन रविवार था। हल्की धूप निकल आई थी। उधर मोहन ने अपने बस्ते को धूप में सूखने के लिए रख दिया था।

वह समझ गया था कि– कोई भी वस्तु जरा–सी खराब हो जाए तो उसकी आवश्यकता कम नहीं होती है। कभी भी बच्चों को जिद नहीं करनी चाहिए।

– जयपुर (राजस्थान)

सुभाषित

अनमोल है समय पर जो,
काम आता है हमारे।
है कृतघ्नी वह बड़ा जो,
काम ले ले और बिसारे।।

मेहनत हुई सफल

– डॉ. के. रानी

चिंटू चींटी बहुत मेहनती और उत्साही थी। वह हमेशा काम में जुटी रहती थी। सुबह-सुबह सूरज निकलने से पहले वह अपने ठिकाने से बाहर खाने की तलाश में चल पड़ती। नीम के पेड़ पर रहने वाली चींचीं चिड़िया बहुत नटखट और चंचल थी। जब देखो वह पेड़ों पर फुदकती और गाने गाती रहती। उसने नीम की ऊँची डाल पर थोड़े से तिनके बटोर कर अपना घोंसला बना रखा था। जब वह थोड़ा ढीला होने लगता तो वह कुछ और तिनके लाकर उसे ठीक कर देती। उसका ऐसे कामों में मन नहीं लगता था।

इन दोनों की भेंट एक पुराने बरगद के पेड़ के पास हुई थी। वहाँ पर एक दिन चींचीं अपने घोंसले के लिए तिनके जुटा रही थी और चिंटू खाने की तलाश में घूम रही थी। उसे अपने निकट आते देखकर पहले तो एमी डर गई। यह देखकर चींचीं बोली।

''डरो मत! मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगी। मैं अधिकांश तुम्हें काम करते हुए देखती हूँ। मुझे ऐसे मेहनती जीव बहुत अच्छे लगते हैं।''

उसकी बात सुनकर चिंटू थोड़ा आश्वस्त हो गई। फिर भी वह उससे दूरी बनाकर ही रखती और थोड़ी देर आते-जाते बात कर लेती। एक दिन सुबह सवेरे चिंटू को नीम के पेड़ के पास घूमते देखकर वह बोली-

''चिंटू! इतनी सुबह क्या कर रही हो?''

''खाना जमा कर रही हूँ। सर्दियाँ आने वाली हैं और मुझे अपने परिवार के लिए पर्याप्त खाना जुटाना है।'' चींचीं को चिंटू की मेहनत देखकर हैरानी हुई।

''तुम इतना परिश्रम क्यों करती हो चिंटू? पेड़ों पर फल-फूल हैं। उन्हें खाओ और मेरी तरह मौज करो।'' चींचीं ने कहा।

''तुम ठीक कहती हो। किन्तु चींचीं हमें आने वाले समय के लिए तैयार रहना चाहिए। माँ कहती थी मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है।''

उनकी बातचीत के दौरान पास के तालाब से गोपी मेंढक कूदता हुआ वहाँ आ गया। वह स्वभाव से शांत था और हमेशा दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता था।

''क्या बातें हो रही हैं?'' गोपी ने अपनी मोटी आवाज में पूछा।

''चींचीं कह रही है कि मुझे मेहनत छोड़ देनी चाहिए।'' चिंटू ने शिकायत की।

''मेहनत तो आवश्यक है लेकिन मिनी का कहना भी सही है। कभी-कभी आराम करना भी आवश्यक होता है। जब देखो तुम काम पर लगी रहती हो।'' गोपी ने समझाया।

''गोपी! तुम जानते हो चीटियाँ हमेशा मेहनत पर विश्वास करती हैं और विपरीत परिस्थितियों के लिए खाना भी जमा करके पहले ही रख लेती हैं।''

''तुम ठीक कह रही हो। हमें तुमसे मेहनत की सीख लेनी चाहिए।''

तभी वहाँ झप्पी गिलहरी दौड़ती हुई आई। वह हमेशा ऊर्जा से भरी रहती थी। वह आज चिंतित स्वर में बोली- ''तुमने कुछ सुना? वन में एक बड़ा तूफान आने वाला है।''

''यह तुमसे किसने कह दिया? तूफान आने का तो पहले से पता भी नहीं चलता।'' चींचीं बोली।

''कोकी कौवा अभी समुद्र किनारे से आ रहा है। उसने मछुआरों को कहते हुए सुना कि जल्दी ही बड़ा तूफान आने वाला है।''

''कोकी की खबरें हमेशा सही होती है। वह इधर-उधर से खबरें बटोर कर वनवासियों को हमेशा सचेत करता रहता है।'' गोपी बोला।

''लेकिन मैं इसके लिए तैयार नहीं हूँ। तूफान की आहट से पहले मुझे अपने घोंसले को और मजबूत

करना होगा वरना वह हवा में उड़ जाएगा।'' कहकर मिनी ने तुरंत उड़ान भरी।

''मुझे भी अपने कुनबे क लिए जल्दी खाना जमा करना होगा।'' चिंटू ने तेजी से काम में जुटते हुए कहा। ''इस अच्छे कार्य में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।'' कहकर गोपी ने तालाब की ओर छलाँग लगाई।

उसी समय से सबने फुर्ती से कार्य करना आरंभ कर दिया। चिंटू ने भूमि से छोटे-छोटे जाने एकत्र किए। चींचीं ने झप्पी की सहायता से घोंसला ठीक करने के लिए मजबूत तिनके और पत्ते जुटाए। गोपी ने तालाब के पास से मजबूत रेशे लाकर चींचीं को घोंसले को पेड़ से बाँधने में सहायता की।

''चींचीं! तुम्हारा घोंसला अब आराम से तूफान का सामना कर सकता है।'' झप्पी ने कहा।

''धन्यवाद मित्रो! यदि तुम नहीं होते तो मेरा घोंसला तेज हवा की मार न झेल पाता और हवा में बिखर जाता।'' चींचीं बोली।

तभी तालाब के पास से टूटू कछुआ धीरे-धीरे चलता हुआ आया। वह बोला- ''तूफान आने में अभी कुछ समय है। मैं अभी समुद्र तट से होकर आ रहा हूँ। तुम सबने बहुत अच्छा काम किया जो पहले से तैयारी कर ली।''

''धन्यवाद टूटू! तुम्हें भी तूफान से सावधान रहना चाहिए।'' चिंटू ने कहा।

यह समाचार वन में आग की तरह फैल गया था। सभी वनवासी अपने ठिकाने मजबूत करने में लगे हुए थे। धीरे-धीरे तूफान की आहट अनुभव होने लगी। हवा तेज हो गई और पेड़ जोर-जोर से हिलने लगे। वनवासी सुरक्षित स्थानों पर छुप गए। चिंटू अपनी कॉलोनी, चींचीं अपने मजबूत घोंसले, गोपी तालाब के अंदर, झप्पी एक खोखले पेड़ में और टूटू अपने मजबूत खोल में बैठ गए। तूफान ने बहुत कहर बरपाया लेकिन वे सब सुरक्षित थे। एक दिन के तूफान के बाद सूरज फिर से चमका और वे सब बाहर आ गए।

''हम सबने मिलकर तूफान का डटकर सामना किया। यह हमारी पूर्व तैयारी का ही परिणाम है।'' गोपी ने कहा।

''मुझे भी अब समझ आ गया कि परिश्रम और तैयारी का बड़ा महत्व है। हमें कभी परिश्रम से जी नहीं चुराना चाहिए।'' चींचीं बोली।

उन सबने सहमति में सिर हिलाया और ठहाके लगाते हुए वापस अपने-अपने काम में लग गए। चींचीं को भी समझ आ गया था कि हमेशा दिल लगा कर काम करना चाहिए। इस बार यदि उसके साथी सहायता न करते तो तूफान के कारण उसे बेघर हो जाना पड़ता। कुछ वनवासी जो तूफान का समाचार सुनने के बाद भी सचेत नहीं हुए थे वह अब अपने ठिकाने ठीक करने में लगे हुए थे।

- चुक्खूवाला (उत्तराखंड)

नन्हा चैम्पियन

– रजनीकांत शुक्ल

भला तीन वर्ष की आयु क्या होती है? आप कहेंगे कि इस आयु में बच्चे कार्टून सीरियल देखते हैं प्ले या नर्सरी में पढ़ते हैं। किन्तु क्या आप ऐसा सोच सकते हैं कि इस आयु में कोई बच्चा कोई ऐसा कारनामा कर सकता है जिससे देश की राष्ट्रपति महोदया उन्हें बच्चों को मिलने वाला सर्वोच्च पुरस्कार 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' देने के लिए दिल्ली में आमंत्रित करें और राष्ट्रपति भवन में स्वयं अपने हाथों से उन्हें यह पुरस्कार प्रदान करें। वह भी तब जब इस पुरस्कार को पाने की आयु सीमा पाँच वर्ष से अट्ठारह वर्ष पहले से तय हो।

अनीश सरकार ने अपनी विलक्षण प्रतिभा और संकल्प शक्ति के बल पर शतरंज के खेल में यह अनूठा कारनामा कर दिखाया। अनीश सरकार का जन्म २६ जनवरी २०२१ को पश्चिम बंगाल के उत्तरी कोलकाता के कैखली में तब हुआ जब देश में कोरोना महामारी का प्रकोप चल रहा था।

उनका परिवार आर्थिक रूप से निम्न मध्य वर्ग में आता है और अनीश के माता–पिता को शतरंज का कोई पूर्व ज्ञान नहीं था। किन्तु अनीश की शतरंज यात्रा उसके तीसरे जन्मदिन से पहले ही शुरू हो गई थी जब उनकी माँ उन्हें अलग–अलग यूट्यूब चैनल दिखा रही थीं जिनमें कई लोकप्रिय कार्टून चैनल भी थे किन्तु अनीश ने बाकी सभी को छोड़कर शतरंज के वीडियो देखने में ही अपनी रुचि दिखाई। जिसके कारण अनीश की माँ ने उन्हें शजरंज का बोर्ड खरीद कर दे दिया। इस तरह जनवरी २०२४ में अनीश की शतरंज यात्रा शुरू हुई और जिस आयु में बच्चे कार्टून देखते हैं, खिलौनों से खेलते हैं इस नन्हे बच्चे ने शतरंज के वीडियो देखने और शतरंज के टूर्नामेंट खेलने प्रारंभ कर दिए।

उनकी बढ़ती रुचि को देखते हुए घरवालों ने अनीश को भारत के दूसरे ग्रांड मास्टर रहे दिब्येंदु बरुआ के नेतृत्व में चलने वाली शतरंज अकादमी में प्रवेश करा दिया जहाँ उन्हें विशेष प्रशिक्षण समूह में रखा गया। जिसमें सात से आठ घंटे प्रशिक्षण लेना होता था।

अनीश की उत्सुकता इतनी अधिक थी कि कभी–कभी वह शतरंज खेलने के लिए ग्रैंड मास्टर बरुआ के घर भी चले जाते। एक बार जब वे बोर्ड पर बैठ जाते तो जल्दी नहीं उठते। शतरंज के प्रति उनकी यह ध्यान साधना और लगन बरुआ को भी आश्चर्य चकित करती थी।

परिणाम यह हुआ कि अनीश ने सितम्बर २०२४ में अपने पहले ऑल बंगाल रैपिड रेटिंग ओपन चैम्पियनशिप में भाग लिया। जहाँ उन्होंने रैपिड में अपनी पहली रेटिंग अर्जित की जिसके फलस्वरूप उन्हें भारत के नम्बर वन और विश्व के नम्बर चार ग्रैड मास्टर अर्जुन एरिगैसी के विरुद्ध वन और विश्व के

नम्बर चार ग्रैंड मास्टर अर्जुन एरिगैसी के विरुद्ध एक प्रदर्शनी मैच खेलने का अवसर मिला। यद्यपि उनका नाम प्रारंभ में पन्द्रह खिलाड़ियों की सूची में नहीं था क्योंकि वे प्रदर्शनी मैच खेलने के लिए योग्यता मानदंडों को पूरा नहीं करते थे। किन्तु एक खिलाड़ी के अनुपस्थित हो जाने के कारण नन्हे अनीश को यह शानदार अवसर मिल गया। इसका कारण था कि आयोजकों ने अनीश का नाम एक विकल्प के रूप में रखा था।

नवम्बर २०२४ में अनीश तीन वर्ष दस महीने और उन्नीस दिन की आयु में दुनिया के सबसे कम उम्र के फिडे रेटेड खिलाड़ी बन गए। जब उन्होंने पश्चिम बंगाल की नौ वर्ष से कम आयु वाले बच्चों की चैम्पियनशीप में खेला जहाँ उनका सामना अपने से छः वर्ष बड़े प्रतिद्वंद्वी से हुआ। इसके बाद भी उन्होंने आठ में से ५.५ अंक अर्जित कर शानदार स्कोर बनाया। उन्होंने एक सौ चालीस खिलाड़ियों के बीच चौबीसवाँ स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में उन्होंने दो रेटेड खिलाड़ियों को भी अपने खेल कौशल से परास्त किया।

इसके एक सप्ताह बाद ही उन्होंने तेरह वर्ष से कम आयु के खिलाड़ियों की चैम्पियनशीप प्रतियोगिता में भाग लिया जिसमें उन्होंने एफआईडीई रेंकिंग प्राप्त करने के लिए आवश्यक न्यूनतम योग्यता, पाँच रेटिड खिलाड़ियों के साथ खेलकर अर्जित कर ली। इस प्रकार एक नवम्बर २०२४ को उनकी अर्जित की गई १५५५ की रेटिंग पहली आधिकारिक एफआईडीई रेटिंग हो गई। इस प्रकार उन्होंने पाँच वर्ष के तेजस तिवारी का रिकार्ड तोड़ दिया था जो उनसे पहले सबसे कम आयु के रेटिड एफआईडीई खिलाड़ी थे।

जब अनीश ने अपने असाधारण बुद्धि कौशल से इन टूर्नामेन्टों में सफलता अर्जित करनी प्रारंभ की तो उसी समय उन पर भारतीय शतरंज वेबसाइट और यू ट्यूब चैनल चेसबेस इंडिया की दृष्टि पड़ गई थी। उसने अनीश की इन उपलब्धियों से खेल दुनिया को परिचित कराया।

अनीश की इस उपलब्धि की सूचना जब भारत सरकार के महिला बाल विकास मंत्रालय तक पहुँची तो वे चकित रह गए। आखिरकार वहाँ से दिए जाने वाले प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए न्यूनतम आयु सीमा पाँच वर्ष थी जिसे अनीश सरकार ने अपने बुद्धि कौशल से तीन वर्ष आठ माह उन्नीस दिन में तोड़ दिया था। परिणामस्वरूप उन्होंने भी अनीश की विलक्षण प्रतिभा को मान्यता देते हुए अपने नियमों में ढील देकर अनीश का नाम इस राष्ट्रीय पुरस्कार में शामिल कर लिया।

यह पुरस्कार प्रदान करते समय स्वयं राष्ट्रपति महोदया ने अपने संबोधन में अनीश की उपलब्धियों को उल्लेख करते हुए उनकी सराहना की और कहा कि आज के कार्यक्रम में सबसे कम आयु के पुरस्कार विजेता जो कोलकाता में रहते हैं, मास्टर अनीश हैं। जिन्हें यह सम्मान इतनी कम आयु में मिला है, जब वे प्ले स्कूल या नर्सरी में होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि वह दुनिया में सबसे कम आयु के शतरंज विजेता हैं।

मुझे विश्वास है कि भविष्य में वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना नाम बनाएँगे।

भारत विश्व में शतरंज का जन्मदाता देश है। अनीश की कम आयु में इन उल्लेखनीय उपलब्धियों को देखते हुए लोग उनकी तुलना उनके कोच ग्रैंड मास्टर दिव्येंदु बरुआ से करते हैं। बरुआ कहते हैं कि अनीश की इस खेल के प्रति दृढ़संकल्प और लगन को देखते हुए उनमें पूर्व के शतरंज प्रतिभाओं की झलक दिखाई देती है। उनमें निश्चित रूप से ऐसा करने की क्षमता है किन्तु उन्हें अभी लम्बा रास्ता तय करना है। अनीश के आदर्श विश्व चैम्पियन मैग्नस कार्लसन हैं। वे उनके खेल को देखते हैं अतिरिक्त जानकारी के लिए अनीश यू ट्यूब पर गोथम शतरंज देखते हैं।

नन्हे मित्रो!

अष्टावक्र और अभिमन्यु वाला देश हमारा।
पैदा होने से पहले प्रतिभा ने हमें सँवारा।
कर डालेंगे हम सारा कुछ, शर्त यही बस चाहें,
चाहेंगे दिल से जो तो, खुद खुल जाएँगी राहें।

– दिल्ली

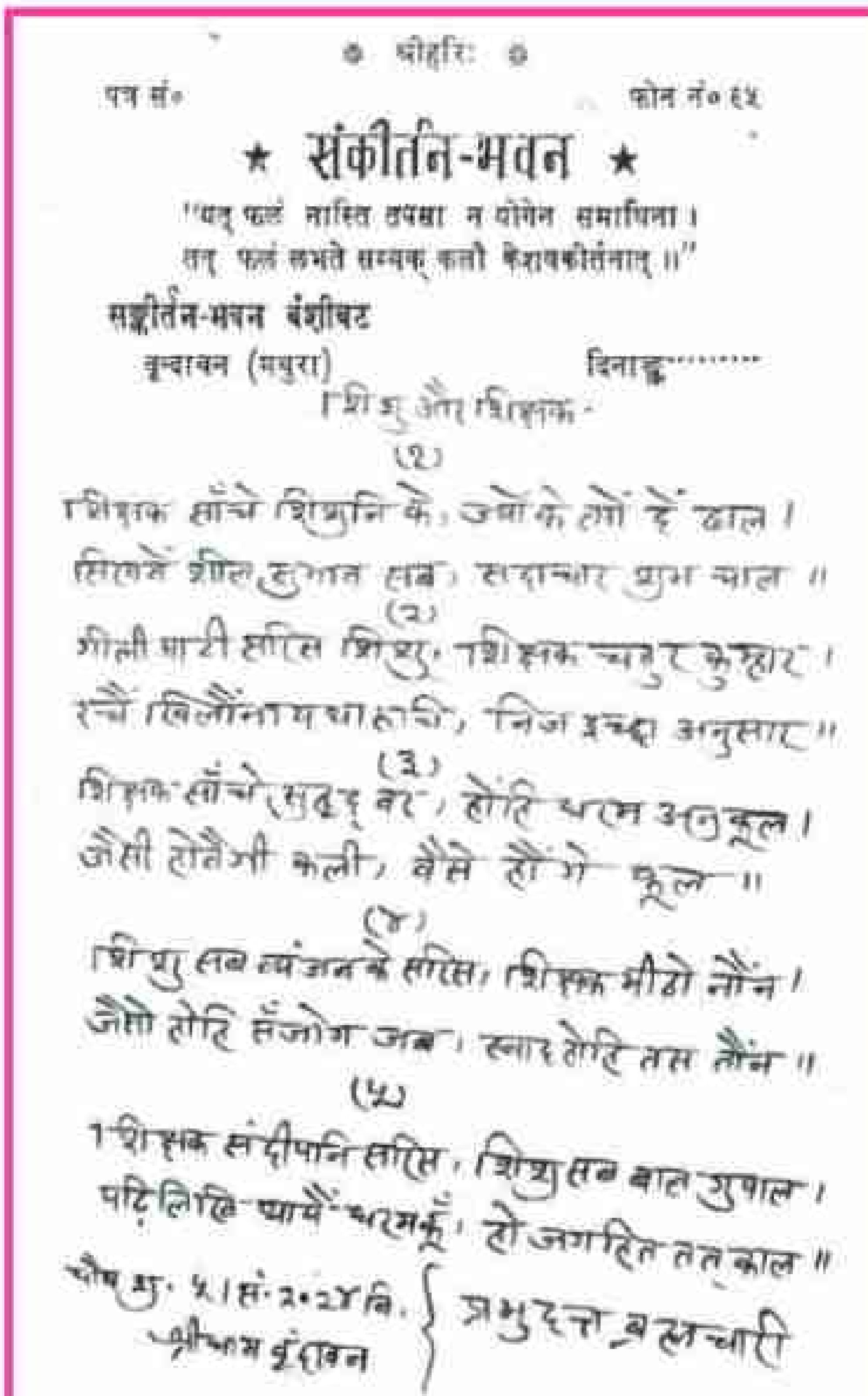
॥ श्रीहरिः ॥
पत्र सं०   फोन नं० ६५
★ संकीर्तन-भवन ★
"यत् फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना।
तत् फलं लभते सम्यक् कलौ केशवकीर्तनात् ॥"
सङ्कीर्तन-भवन वंशीवट
वृन्दावन (मथुरा)   दिनाङ्क........

शिशु और शिक्षक

(१)
शिक्षक साँचे शिशुनि के, ज्यों के त्यों दें ढाल।
सिखवें शील सुभाव सब, सदाचार शुभ चाल॥
(२)
गीली माटी सरिस शिशु, शिक्षक चतुर कुम्हार।
रचैं खिलौना यथारुचि, निज इच्छा अनुसार॥
(३)
शिक्षक साँचे सुघड़ वर, होंहि धरम अनुकूल।
जैसी होवैगी कली, वैसे होंगे फूल॥
(४)
शिशु सब व्यंजन के सरिस, शिक्षक मीठो नौंन।
जैसो होहि सँजोग अब, स्वाद होहि तस तौंन॥
(५)
शिक्षक संदीपनि सरिस, शिशु सब बाल गुपाल।
पढ़िलिखि पावैं धरमकूँ, हो जगहित तत्काल॥

पौष शु. ५। सं. २०२४ वि. श्रीधाम वृन्दावन — प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

राष्ट्रसंत पूज्य श्री. प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी द्वारा उन्ही की हस्तलिपि में ५८ वर्ष पूर्व रचित दोहे जो श्री. शैवाल सत्यार्थी जी के सौजन्य से प्राप्त हुए। –संपादक

भूल-भुलैया

ञ खाली

– चाँद मोहम्मद घोसी

चूँ-चूँ चूहे को जोरदार भूख लग रही है। उसकी नाक में ताजे फलों की गंध आ रही है। लेकिन फलों के पास पहुँचने का रास्ता बड़ा कठिन है। आप चूँ-चूँ को फलों के पास पहुँचाइए ताकि फल खाकर चूँ-चूँ भूख मिटा सके।

– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी, नागौर (राजस्थान)

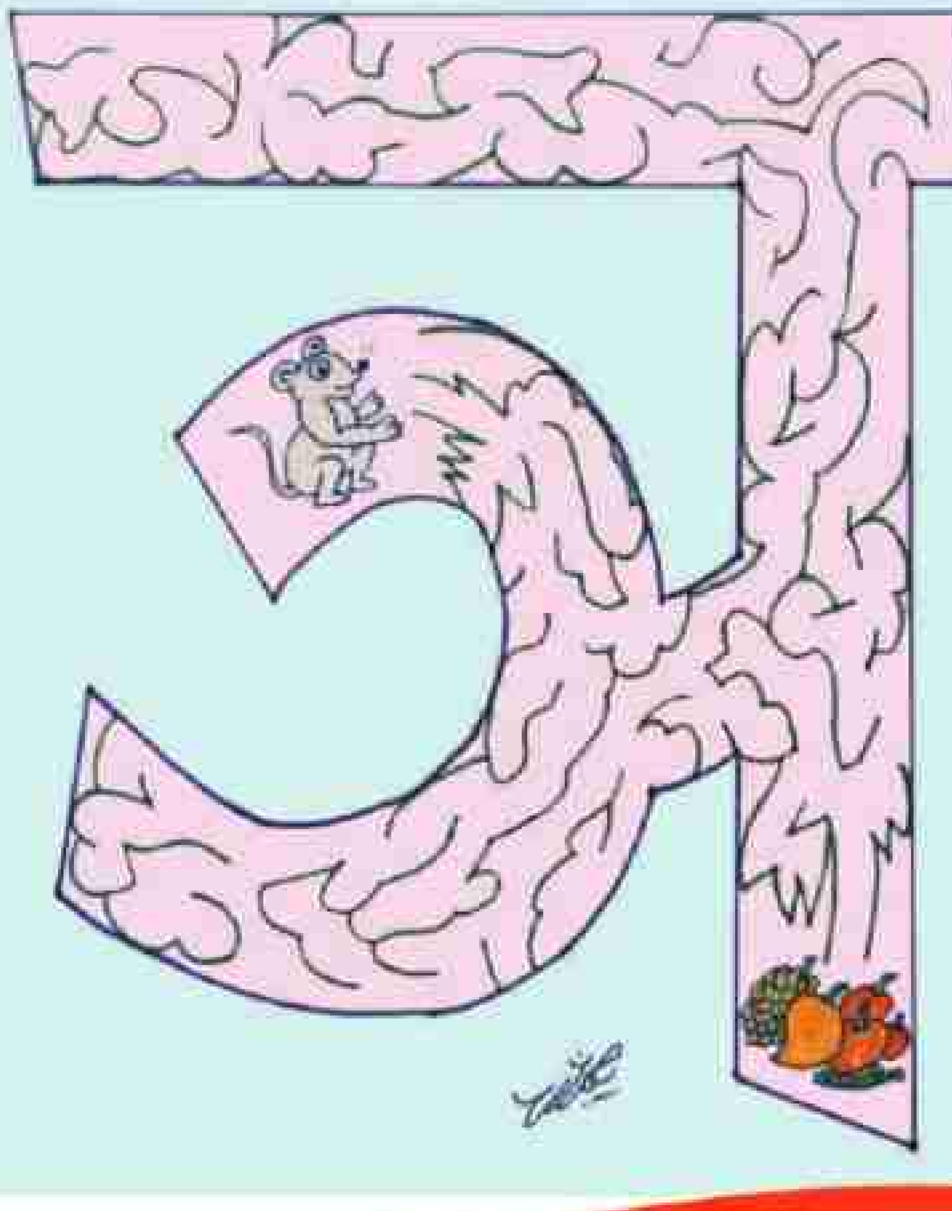

माता और महिषासुर

दुर्गा-सप्तशती की एक कथा

चित्रांकन और प्रस्तुति- **संकेत गोस्वामी**

बहुत पुरानी बात है देवताओं और असुरों में सौ वर्षों तक घोर युद्ध हुआ. इसमें असुरों ने जीत हासिल की और असुरों का राजा महिषासुर सम्पूर्ण देवताओं को जीतकर इंद्र बन बैठा. उसने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया और सूर्य, चंद्र, अग्नि, यम, वरुण सहित सभी देवताओं से उनके अधिकार छीन कर खुद को सर्वोच्च शक्ति घोषित कर दिया.

उसे सभी देवता मिलकर भी इसलिए नहीं हरा पाए क्योंकि उसने घोर तपस्या कर ब्रह्मा जी से यह वरदान पा लिया था-

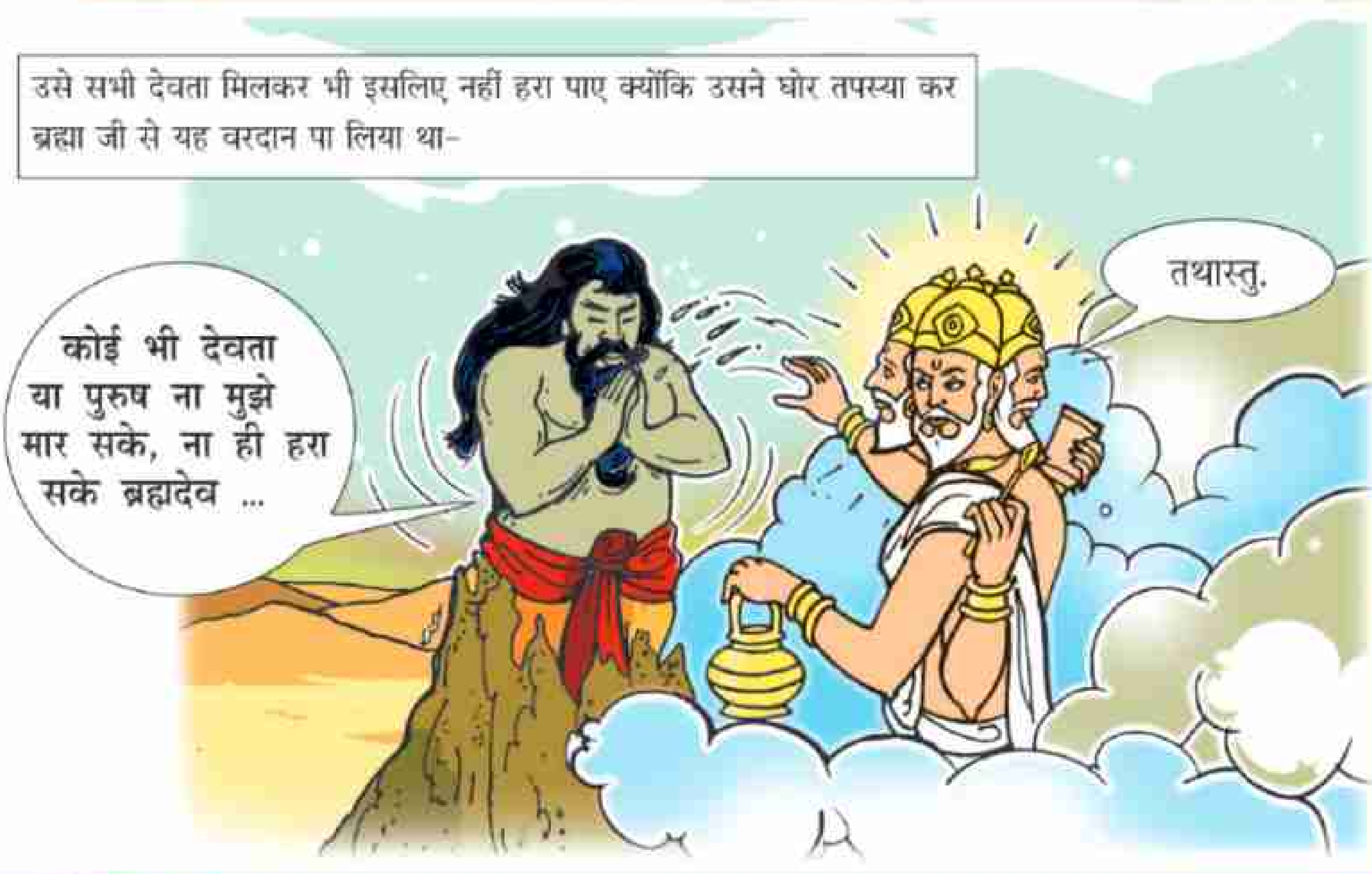

पराजित और दुखी देवता ब्रह्मा जी को साथ ले उस स्थान पर गए जहां भगवान शिव और भगवान विष्णु विराजमान थे. देवताओं ने सब घटनाक्रम और ब्रह्मा जी के वरदान की बातें उन्हें कह सुनाई.

तभी आकाशवाणी हुई और मां भगवती ने सब देवताओं से अपना-अपना तेज इकट्ठा करने को कहा. इस पर भगवान विष्णु, शिव, ब्रह्मा और इंद्र आदि देवताओं के शरीर से बड़ा भारी तेज निकला... *और वह सारा तेज मिलकर एक बड़े तेजपुंज में बदल गया...*

उस विराट और अतुलित तेज पुंज को मां भगवती ने धारण किया और सगुण रूप में प्रकट हुई. विष्णु और शिव सहित सभी देवताओं ने देवी को अपनी शक्तियों से सम्पन्न और शस्त्रों से सुसज्जित किया. तब देवी बोली-

देवताओं ने बड़ी प्रसन्नता के साथ सिंह पर सवार मां की स्तुति की. तब देवी ने इतनी जोर से अट्टाहस किया कि तीनों लोकों के आकाश कांप उठे और दिशाएं थर्रा उठी. उच्च स्वर की यह गर्जना सारी सृष्टि में गूंज गई.....

महिषासुर अपने महल में था उसने जब यह सिंहनाद सरीखा स्वर सुना तो क्रोध से चिल्लाया-
सैनिकों पता करो, हजारों बादलों के गरज जैसी यह आवाज कहां से आई ?
सैनिकों ने कुछ ही देर में उसे यह सूचना दी -
महाराज! कई तरह के अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित एक अत्यंत सुंदर स्त्री ने यह अट्टाहस किया था. क्षमा करें महाराज वह तो कहती है कि वह आपको अपने साथियों सहित यमलोक पहुंचा देगी.
महिषासुर बेहद क्रोधित हुआ. उसने अपने सेनापति चिक्षुर को आज्ञा दी-
चिक्षुर, तुम सेना सहित जाकर उस अभिमानी स्त्री को सबक सिखाओ। या तो उसे यहां आने को विवश करो वरना मार ही डालो..

चिक्षुर गया, लेकिन लौटा नहीं. वह देवी के हाथों मारा गया. महिषासुर के अन्य दैत्य सेनापतियों महाहनु, चामर, उदग्र, असिलोमा, बिलाड़, दुर्मुख और बास्कल का भी यही हाल हुआ.

कोई असुर माता की गदा की चोट से, तो कोई तीर से, कोई तलवार से, तो कोई चक्र से, कोई हुंकार से तो कोई तीक्ष्ण दृष्टि से मृत्यु को प्राप्त हुआ...

ढ़ेरों असुर माता द्वारा की गई तीरों की वर्षा से मृत्यु को प्राप्त हुए...

रणभूमि में दैत्यों के साथ युद्ध करते हुए मां भगवती ने जितने निःश्वास छोड़े वे सभी सैकड़ों हजारों गणों में बदलने लगे. उन्होंने भी असुरों का वध किया...

तब अपने सभी सेनापतियों की पराजय से महिषासुर बौखला गया.... क्रोध से पागल होकर वह युद्ध भूमि में देवी के सामने आ पहुंचा और बोला-

तब देवी ने भी महिषासुर को चेतावनी दी-

तब दोनों में युद्ध छिड़ गया. अपनी सेना का संहार होते देख महिषासुर ने महिष (भैंसे) का रूप धारण कर लिया और देवी के गणों को त्रास देना शुरू किया. उस महापराक्रमी ने क्रोध में भरकर धरती को अपने खुरों से खोद डाला...वह अपने सींगों से ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों को उठाकर फेंकने और गर्जने लगा. उसके वेग से धरती फटने लगी. उसकी पूंछ से टकराकर समुद्र भी धरती को डुबोने लगा. उसके सींगों के आघात से बादल टुकड़े-टुकड़े हो गए....

यह सब देखकर देवी को बड़ा क्रोध आया. उन्होंने पाश फेंककर उस विकराल असुर को बांध लिया. लेकिन तब उसने भैंसे का रूप त्याग दिया और फिर सिंह और उसके बाद खड्गधारी पुरुष के रूप में प्रकट हुआ. देवी ने उस पर बाणों की वर्षा की तो वह एक विशालकाय गजराज के रूप में बदल गया. देवी ने उसकी सूंड अपनी तलवार से काट डाली तो महिषासुर फिर भैंसे के रूप में आकर अपने बल व पराक्रम से उन्मत हो, गर्जने लगा...

ये कहकर देवी उछली और महिषासुर के ऊपर चढ़ गई..तब महिषासुर भैंसे के रूप से निकलकर फिर अपने दैत्य स्वरूप में आने लगा.. अभी वह आधे शरीर में ही बाहर निकल पाया था कि देवी ने अपने प्रभाव से उसे आधे में ही रोककर काट गिराया. महिषासुर मारा गया.. बचे खुचे दैत्य भाग निकले...

हम सब साथ हैं

– पवन कुमार वर्मा

नया शहर, नया विद्यालय, नए मित्र, नई पुस्तकें, कापियाँ। प्रणय के लिए यहाँ सब कुछ नया था। बहुत जल्दी यहाँ भी उसके कई मित्र बन गए। प्रत्यक्ष, शिवांश, रूद्र, माही। इन सबके साथ उसकी गहरी मित्रता हो गई थी। अब तो उनमें मित्रता के साथ–साथ अधिक नंबर पाने की होड़ भी रहती थी।

कृष्णा भी उनकी कक्षा में था। बहुत सीधा और शांत। वह किसी से अधिक बात नहीं करता था। प्रणय ने जब भी उससे बात करने का प्रयत्न किया तो वह उससे दूर हटने लगता था।

भोजन के समय जब सारे बच्चे भोजन कर रहे होते तो वह कक्षा से बाहर चला जाता। भोजन तो कक्षा में ही करना होता है, फिर वह बाहर क्यों चला जाता है?

आज प्रणय ने तय किया था कि वह इस बारे में कृष्णा से अवश्य पूछेगा। उसे भोजनावकाश के समय की प्रतीक्षा थी। जैसे ही घंटी बजी वह कृष्णा के पीछे लग गया। कृष्णा कक्षा से निकलकर बाहर आ गया। प्रणय भी उसके पीछे–पीछे था। कक्षा के बाहर आकर कृष्णा इधर–उधर घूमता रहा।

''तो क्या कृष्णा टिफिन नहीं लाता? शायद इसीलिए वह कक्षा से बाहर चला जाता है। तो क्या वह शाला की छुट्टी तक बिना खाए–पीए ही रहता है?'' ऐसे बहुत से प्रश्न प्रणय के मन में चलने लगे।

वह कृष्णा के पास आया और पूछा– ''क्या तुम टिफिन लेकर नहीं आए?'' कृष्णा ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया और आगे बढ़ने लगा। लेकिन प्रणय ने उसका हाथ पकड़ लिया।

''देखो! हम सब एक ही कक्षा में पढ़ते हैं! हमें आपस में मिल–जुलकर रहना चाहिए। तुम क्यों सबसे अलग रहते हो? तुम्हें भी हमारे साथ रहना चाहिए। यदि तुम टिफिन लेकर नहीं आए तो कोई बात नहीं! तुम हमारे साथ लंच करो!'' प्रणय ने उसे समझाया।

''यह कभी टिफिन लेकर नहीं आता।'' प्रत्यक्ष बोला। वह भी शिवांश के साथ उन दोनों के पास आ गया।

''क्यों?'' यह सुनकर प्रणय चौंक गया।

''क्योंकि यह हॉस्टल में रहता है। वहाँ शाला की छुट्टी के बाद ही भोजन मिलता है।'' शिवांश ने प्रणय को बताया। कृष्णा चुपचाप खड़ा उनकी बातें सुन रहा था।

''अच्छा! तो तुम हॉस्टल में रहते हो? क्या तुम्हारा घर यहाँ से बहुत दूर है?'' प्रणय ने कृष्णा से पूछा।

थोड़ी देर तक तो कृष्णा चुप रहा फिर बोला– ''नहीं!''

''तो फिर तुम हॉस्टल में क्यों रहते हो?'' प्रणय उससे जानना चाहता था।

''मेरे पिताजी भारतीय सेना में हैं। उन्हें वर्ष में दो–तीन बार ही छुट्टी मिल पाती है। इसलिए उन्होंने मुझे हॉस्टल में रख दिया।'' उसने धीरे से उनकी बात का उत्तर दिया।

''और तुम्हारी माँ?'' अब प्रत्यक्ष ने उससे पूछा

''वह इस दुनिया में नहीं हैं।'' इतना कहकर

कृष्णा रोने लगा। उसकी बात सुनकर सब के सब चौंक गए।

प्रणय बहुत समझदार था। वह कृष्णा का हाथ पकड़ कर उसे अपने साथ कक्षा में ले आया। उसने अपने मित्रों को भी वहाँ बुलाया।

''चलो! हम सब मिलकर भोजन करते हैं। अब आज से कृष्णा भी प्रतिदिन हमारे साथ ही भोजन करेगा।'' प्रणय ने अपने मित्रों से कहा।

''प्रणय की बात बिलकुल ठीक है। चलो कृष्णा! तुम भी हमारे साथ चलो। हम सब तुम्हारे साथ हैं।'' शिवांश बोला।

फिर सबने अपने-अपने टिफिन से कृष्णा को भी खाना खिलाया। सबके साथ भोजन करके उसे बहुत अच्छा लगा। आज वह बहुत प्रसन्न था। अब वह अकेला भी नहीं था।

- वाराणसी (उ. प्र.)

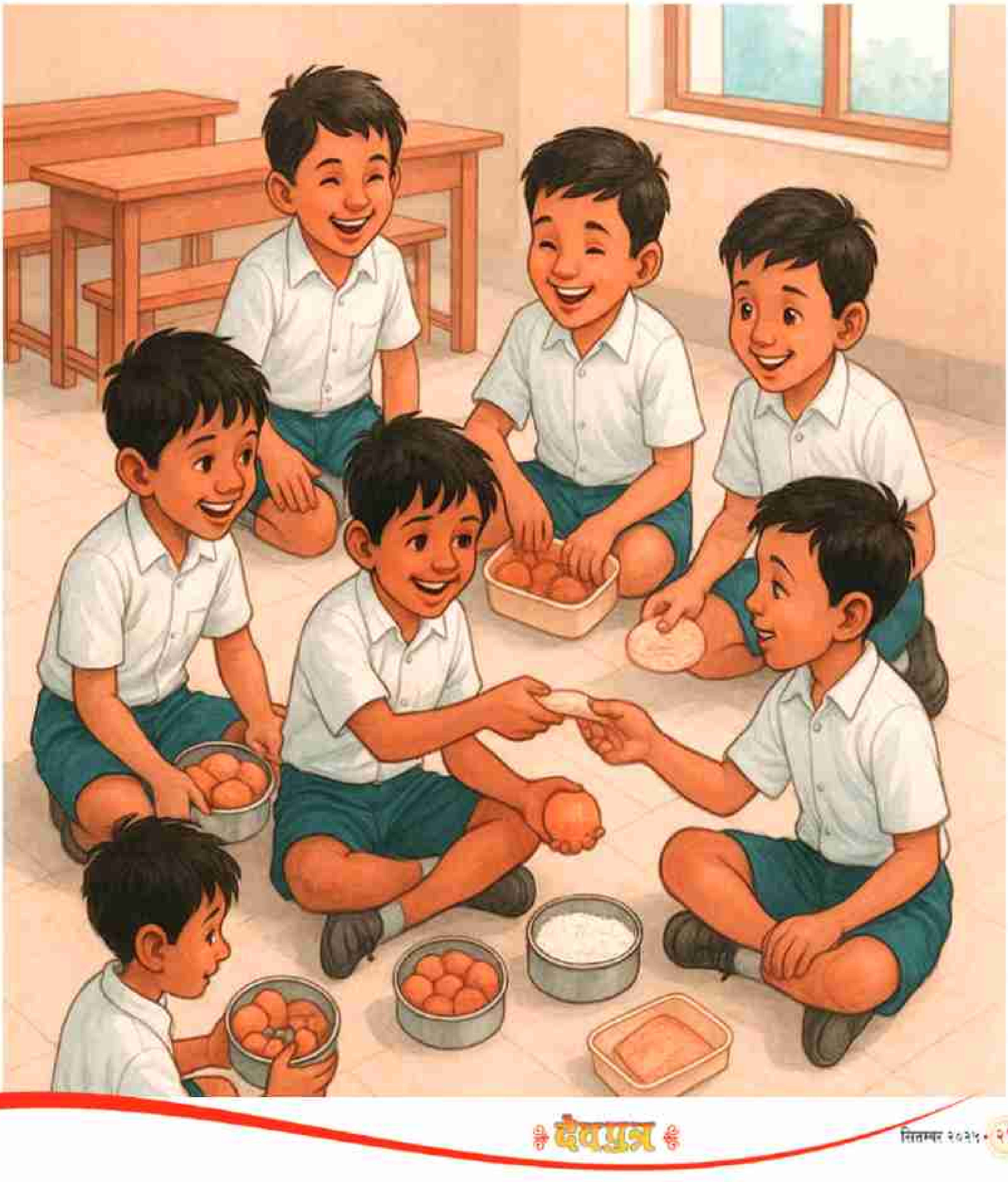

नींद बड़ी आवश्यक

(गत अंक से आगे)

– डॉ. मनोहर भण्डारी

उपवास, परम औषधं– शरीर शुद्धि और रोगमुक्ति के लिए साप्ताहिक रूप से उपवास का अभ्यास करें तथा प्रतिदिन दस ग्यारह घंटों का निराहार रहने का प्रयास करें। इससे ऑटोग्राफी की क्रिया सक्रिय हो जाती है, जिसके कारण शरीर रोग ग्रस्त कोशिकाओं तथा रोगाणुओं को भक्षण करने लगता है। उपवास के आधार पर स्वास्थ्य को लेकर की गई खोज के कारण जापानी वैज्ञानिक **योशिनोरी ओहसुमी** को २०१६ का नोबेल विजेता घोषित किया गया था।

निद्रा जो तू नहीं तो कुछ भी नहीं है– महर्षि चरक ने निद्रा को पोषण करने वाली कहा है। उन्होंने यह भी कहा है कि सुख–दुःख, पुष्टि, दुर्बलता, बल–निर्बलता, ज्ञान–विज्ञान, जीवन–मरण, ये सब निद्रा के अधीन हैं। सभी के लिए औसतन सात घण्टों की नींद आवश्यक है। रात दस बजे सोने का प्रयास करें। दक्षिण या पूर्व में सिरहाना रखें। शयनकक्ष में पूर्ण अंधकार हो। वायु का प्रवाह हो। सोते समय दिनभर में किए गए कार्यों का निष्पक्षता के साथ विश्लेषण करें। रात सोते समय भगवान से रोग मुक्ति के लिए प्रार्थना करें। बार–बार दोहराएँ कि मैं स्वस्थ हो रहा हूँ, स्वस्थ हो रहा हूँ। फ्रेंच मनोवैज्ञानिक **इमाइल कूए** ने विश्वभर के हजारों रोगियों को इसी विधा से स्वस्थ किया था। गूगल पर **ट्रीटमेंट ऑफ बालकदास जी यूजिंग ऑटो सजेशन एण्ड न्यूरोप्लास्टीसिटी** देखना चाहिए। रात को सोते समय विद्यार्थी यदि दोहराते हैं कि मेरी स्मरण शक्ति बढ़ रही है तो इसका सकारात्मक प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। अनेकानेक वैज्ञानिकों के शोध का निष्कर्ष है कि सकारात्मक सोच रोगमुक्ति के लिए भी एक बहुत ही प्रभावी विधा है।

मोह, जलन, ईर्ष्या, लोभ, क्रोध, चिन्ता, आशंका, भय आदि अप्रिय विचारों को मन–मस्तिष्क में ना एकत्र करें– ये सभी नकारात्मक मन: स्थितियाँ रोगों को जन्म देती हैं। भगवान श्रीराम ने गुरु वसिष्ठ जी से शारीरिक रोगों के कारण के बारे में पूछा था। तब गुरुजी ने उत्तर दिया था कि राम! जब हम विषैले विचार मन में लाते हैं तो मनोमय कोष दूषित हो जाता है और वह प्राणमय कोष को उत्तेजित करता है। जो अन्नमय कोष अर्थात् शरीर में रोग के रूप में प्रकट होता है। **डॉ. स्टीवर्ट वोल्फ** ने मन और शरीर के उपरोक्त आपसी संबंधों को प्लेसेबो आधारित अपने अध्ययन से सिद्ध किया था। ब्रिटिश चिकित्सक और मनोचिकित्सक **डॉ. डैनियल हैक ट्युक** ने 'इलस्ट्रेशन्स ऑफ द इन्फ्लुन्स ऑफ द माइंड अपॉन द बॉडी इन हेल्थ एण्ड डिसीज' नामक अपनी पुस्तक में मन और शरीर के संबंधों को उदाहरणों के साथ बताया है।

– इन्दौर (म. प्र.)

बालगीत

चिड़िया बन उड़ती

- विष्णु शर्मा 'हरिहर'

पंख लगाकर के सपनों में,
मैं चिड़िया बन उड़ती।
हर बाधा को दूर हटाकर,
आगे-आगे बढ़ती।।
ऊँचे-ऊँचे पर्वत छूकर,
नहीं तनिक भी थकती।
रोज नए फल खाकर मैं तो,
स्वाद अनोखा चखती।।
संग हवा के बहती-बहती,
तूफानों से लड़ती।।१।।

नदी सरोवर सागर मैंने,
बहुत पास से देखे।
जैसा-जैसा समझा उनको,
भाव ह्रदय में लेखे।।
हर बाधा को मान चुनौती,
हिम्मत करके चढ़ती।।२।।

देशी और विदेशी सारी,
घूमके देखी धरती।
एक सरीखी लगती माता,
सब की झोली भरती।।
रूप सभी में रब का दिखता,
भाव प्रेम के पढ़ती।।३।।

जाग नींद से लगी कर्म में,
लक्ष्य सामने पाती।
हिम्मत को हथियार बनाकर,
गीत नया फिर गाती।।
विजय माल में सुंदर-सुंदर,
नित उठ मोती जड़ती।।४।।

- कोटा (राजस्थान)

अनुवाद : लोककथा आधारित ओड़िया कहानी

सात चकुली, चौदह चें

मूल लेखक – भाबेश चंद्र कॅरॅ
अनुवादक – डॉ. रश्मि वार्ष्णेय

जन्मदात्री माँ को कुछ लोग 'माँ' कहकर बुलाते हैं, तो कुछ 'बोउ' कहकर बुलाते हैं और आजकल के बच्चे उन्हें 'ममी' तो कुछ 'मम्' कहकर भी बुलाते हैं। लेकिन मैं 'बोउ' कहकर ही बुलाता हूँ। मैंने अपने बचपन के कुछ वर्ष शहर में ही बिताए थे। बचपन की अनेक घटनाएँ विस्मृत हो जाती हैं। लेकिन अपने बच्चों की शैतानियाँ देखकर बचपन की वे सारी बातें मन:पटल पर उभरने लग जाती हैं। तो आज उन घटनाओं में से एक घटना नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हम सभी अपने ताऊ जी (युगल किशोर कॅरॅ) के परिवार के साथ कटक के महमदिया बाजार में रहते थे। उस समय, हमारे पिता, ताऊ और चाचा संयुक्त परिवार का महत्व समझते थे। मैं अपनी बड़ी बहनों के साथ डगरपड़ा प्राथमिक विद्यालय में पढ़ता था। उस समय न तो मध्याह्न भोजन की कोई व्यवस्था हुआ करती थी और न ही शाला दंड-मुक्त क्षेत्र हुआ करते थे।

बच्चों में शिक्षकों और शिक्षिकाओं के प्रति भय और भक्ति का भाव हुआ करता था। उस समय हमारे विद्यालय में एक बहनजी (शिक्षिका) थीं। मुझे उनका नाम स्मरण नहीं है। लेकिन जिसने उन बहनजी का थप्पड़ खाया होगा, उसे आज भी याद होगा। एक और बात भी उतनी ही सत्य है कि थप्पड़ खाने वाले ने थप्पड़ खाने के बाद अपनी पेंट तो अवश्य ही गीली की होगी। किन्तु मैंने कभी ऐसा नहीं किया था। आप लोग हँस तो नहीं रहे हैं न?

तो... एक बार बहनजी दूसरे शिक्षक से बात कर रही थीं। मैं वहीं से निकल रहा था। बहनजी की एक बात मेरे कान में पड़ी। बहनजी सर से कह रही थीं 'सात चकुली, चउद चें।' वे किस बारे में बात कर रही थीं, यह मैं सुन नहीं सका था। मैं मन में सोचता रहा कि इसका क्या अर्थ है? चकुली तो चकुली होती है। हाँ, सात चकुली (चावल का चीला या पीठा) है। फिर यह चें क्या है? इसका कोई उत्तर दिमाग में नहीं आया था। मेरी सभी समस्याओं का हल मेरी माँ थीं। मैंने सोचा कि रात में माँ के कहानी सुना लेने के बाद उनसे पूछूँगा। फिर मेरे मन में आया कि मुझे कहानी सुनते-सुनते नींद आ जाएगी। इसलिए कहानी सुनाने से पहले ही मैं माँ से पूछ लूँगा। मैं शाला से लौट कर घर पहुँचा। माँ ने मुझे भात (उबला हुआ चावल) परोसा। मैं अपने हाथ-पैर धोकर भोजन करने बैठ गया।

माँ ने मेरे चेहरे पर दृष्टि गड़ाते हुए पूछा- ''अरे बाबू! तुम्हें कुछ हुआ है क्या?'' मैं चौंक गया और बोला- ''क्यों... नहीं तो... कुछ भी नहीं हुआ है?.. ऐसे पूछ रही है, जैसे बहुत बड़ी डॉक्टर हैं।'' माँ हँस पड़ी और मेरे सिर पर हाथ फिराते हुए कहा- ''ठीक है, तू खा।'' मैं भोजन करने के बाद खेलने चला गया।

रात हुई। मैं अपनी पढ़ाई करने बैठ गया। पढ़ाई कर लेने और खाना खा लेने के बाद, मैं प्रतीक्षा करने लगा कि कब माँ का काम समाप्त हो और वे मुझे कहानी सुनाएँ। उस समय मुझे शाला में बहनजी की कही हुई उसी बात का स्मरण हो आया। मैंने विचार किया कि मैं कहानी बाद में सुनूँगा, पहले माँ से इस बारे में पूछूँगा।

मेरी प्रतीक्षा की घड़ी बड़ी आतुरता से बीतने के बाद माँ का काम समाप्त हुआ और माँ सोने के लिए आईं। उन्होंने मुझे प्रतीक्षा करते हुए देख कर पूछा- ''तुझे नींद नहीं आ रही?'' मैंने कहा- ''आपसे कहानी नहीं सुनी न। इसलिए मुझे नींद नहीं आ रही है।'' माँ हँस पड़ीं और मेरी बगल में लेट कर अपनी कहानी शुरू करने लगी। मैंने कहा- ''रुको बोउ! कहानी बात में सुनाना। पहले मुझे यह बताओ कि बहनजी, सर से आज कह रही थीं कि सात चकुली, चउद चें। इसका अर्थ क्या है? माँ ने कहा कि इसकी

एक कहानी है। वही कहानी आज तुझे सुनाऊँगी। मैं बहुत प्रसन्न हो गया क्योंकि माँ मेरे प्रश्न से जुड़ी हुई एक कहानी सुनाने वाली थी। इसका मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। माँ ने अपनी कहानी प्रारंभ की। कहानी इस प्रकार है-

एक गाँव में एक धर्मपरायण विधवा वृद्धा रहती थी। उसके कोई बच्चे नहीं थे। वह वृद्धा अपने घर में किसी अतिथि के आने पर आदरपूर्वक उसकी खूब आवभगत करती थी। एक दिन की बात है। एक ब्राह्मण काम की इच्छा से पैदल शहर जा रहा था। उस गाँव तक पहुँचते-पहुँचते संध्या हो गई थी। वृद्धा का घर सड़क के किनारे ही होने के कारण वह ब्राह्मण उसके ओसारे में बैठ गया और उस वृद्धा से पूछा- ''मौसी! क्या आप मुझे रात भर अपने घर पर रुकने की अनुमति देंगी?''

वृद्धा की अनुमति से ब्राह्मण उसके घर में ठहर गया। रात में वृद्धा ने ब्राह्मण को पीठा और दूध का भोजन कराया। ब्राह्मण खाता जाता था और वृद्धा उसे पीठा देती जाती थी। सात पीठा खाने के बाद उसने दूध पिया और हाथ धोने बैठ गया। वृद्धा ने उससे पूछा कि गोसाईं महाराज! क्या मैं और पीठा नहीं देती? ब्राह्मण ने कहा- ''माता! आपने तो सात पीठे ही बनाए थे। यदि मैंने पीठा माँगा होता तो आप कहाँ से लातीं?'' वृद्धा चौंक गई और विचार करने लगी, ''अरे! ब्राह्मण को कैसे पता चला कि मैंने सात पीठे ही बनाए हैं?''

गोसाईं जी संभवतः भविष्य देख सकते हैं। उसने गाँव भर में ब्राह्मण गोसाईं के बारे में बताया। गाँव वाले ब्राह्मण के पास जाकर एकत्रित हो गए। उनमें से एक किसान था जिसके हल का फाल खेत में खो गया था। उसने ब्राह्मण से पूछा कि उसे खोया हुआ हल कहाँ से मिल सकता है। वस्तुतः ब्राह्मण को ऐसी कोई विद्या नहीं आती थी, किन्तु उसने इस बारे में कुछ बताए बिना ही किसान से कहा- ''मुझे अपना खेत दिखाओ और कल सुबह आना, मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हारा हल कहाँ गया।''

किसान ने अपना खेत ब्राह्मण को दिखाया। रात को ब्राह्मण किसान के खेत में गया और काफी खोज-बीन के बाद उसने अपेक्षित फाल ढूँढ निकाला और उसे खेत की उत्तर दिशा में रखकर आ गया। अगली सुबह जब किसान ब्राह्मण के पास आया और हल के फाल के बारे में पूछा तो उसने खेत की उत्तर

दिशा में उसके होने के बारे में बताया। किसान खेत में गया और देखा कि हल खेत के उत्तर दिशा में पड़ा है। वह उसे तो लेकर आया ही, साथ ही सब लोगों को बताया कि ब्राह्मण गोसाईं सर्वद्रष्टा पंडित हैं।

यह बात दूर-दूर तक फैल गई कि ब्राह्मण गोसाईं सर्वज्ञ पंडित हैं और यह बात एक मुँह से दूसरे मुँह तक होते हुए राजा के कानों तक भी पहुँची। राजा ने ब्राह्मण को बुलाकर पूछा- ''मैंने लोगों के मुँह सुना है कि आप सर्वद्रष्टा पंडित है। तो बताइए कि मैंने अपने हाथ में क्या पकड़ रखा है? यदि तुम मेरे प्रश्न का सही उत्तर नहीं दे पाए तो तुम्हें मृत्युदंड दिया जाएगा।''

ब्राह्मण को समझ में नहीं आया कि क्या कहे। वह विचार करने लगा कि यदि उसने प्रारंभ से ही लोगों को सच बता दिया होता तो अच्छा होता। यहाँ तक कि वह बड़बड़ाने लग गया, ''सात चकुली, चौदह चें। कीचड़ में लथपथ होकर भी कौड़ी ही मिली और अब राजा के हाथ मली (अर्थात् मरा)।'' राजा को केवल यही सुनाई दिया- ''राजा के हाथ मली।'' राजा के हाथ में मल्ली (मोगरा) फूल था।

अतः राजा ने ब्राह्मण को सर्वज्ञ पंडित समझकर उसे स्वर्ण मुद्रा देकर पुरस्कृत किया।

तब मेरी माँ ने मुझसे पूछा- ''समझे कि कैसे सात चकुली, चौदह चें होती हैं। पीठा बनाते समय यदि घोल को गरम तवे पर डालने पर उसमें से चटकने की चें आवाज आती है और जब पीठा पलटेंगे तब भी चटकने की चें आवाज आती है। इस तरह यह आवाज चौदह बार निकलने के कारण ब्राह्मण को पता था कि सात पीठे बनाए गए थे। इस तरह मुझे बहनजी के कथन 'सात चकुली, चौदह चें' के मतलब समझ में आया। इसके बाद मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब सो गया।

-मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रेरक-प्रसंग- १५ सितम्बर अभियंता दिवस

नियम पालन

- गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

१५ सितंबर को अभियंता दिवस महान इंजीनियर भारतरत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

सुप्रसिद्ध इंजीनियर डॉ. एम. विश्वेश्वरैया अपने कर्त्तव्य और नियम पालन के प्रति अत्यंत आस्थावान थे। उन्हें 'भारतरत्न' उपाधि से अलंकृत किया गया था। जब वे सम्मान प्राप्त करने हेतु दिल्ली गए तो राष्ट्रपति भवन में ठहरे। उस समय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी राष्ट्रपति के पद पर आसीन थे।

प्रवास के तीसरे दिन वे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पास जाकर बोले- ''कृपया अब आप मुझे आज्ञा दें, जाना चाहता हूँ।'' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा- ''आप कुछ दिन और यहाँ ठहरें साथ में। क्या यहाँ कोई कष्ट है आपको?''

इस पर डॉ. विश्वेश्वरैया ने कहा- ''नहीं महोदय! कष्ट तो कोई नहीं है। परंतु मुझे यहाँ ठहरे हुए तीन दिन हो चुके हैं। नियमानुसार राष्ट्रपति भवन में कोई व्यक्ति तीन दिन से अधिक नहीं ठहर सकता। आप कहते हैं तो मैं और कहीं रुक लूँगा और आपसे विचार-विमर्श करने आ जाऊँगा।''

डॉ. साहब की नियम पालन की यह दृढ़ता देखकर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अत्यंत प्रसन्न हुए। डॉ. विश्वेश्वरैया जी का यह आचरण सभी के लिए अनुकरणीय है।

- लखनऊ (उ. प्र.)

अर्जुन का दिव्यास्त्र लाने जाना

– मोहनलाल जोशी

पाण्डव काम्यक वन में रह रहे थे। एक बार उनके पास वेदव्यास जी आये। वेदव्यास जी ने युधिष्ठिर को प्रतिस्मृति विद्या दी। इस विद्या से सभी को देखने की दिव्य दृष्टि मिल जाती है।

युधिष्ठिर ने वह विद्या अर्जुन को दी। उन्होंने अर्जुन को दिव्यास्त्र लाने इन्द्र के पास भेजा। कौरवों से युद्ध करने के लिए दिव्यास्त्रों की जरूरत थी।

अर्जुन उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत पर गया। उसने गन्धमादन पर्वत पार कर लिया। अर्जुन आगे इन्द्रकील पर्वत पर पहुँच गया। वहा उसे एक संन्यासी मिला। संन्यासी ने कहा– तुम देवताओं की भूमि पर कहाँ जा रहे हो। तुम्हारे पास तो धनुष बाण भी है। यहाँ तपस्वी रहते हैं। यहाँ शस्त्रों की क्या आवश्यकता है ?

अर्जुन ने कहा– मुझे इन्द्र से मिलना है। मुझे दिव्यास्त्र चाहिए। तब संन्यासी ने कहा– मैं ही इन्द्र हूँ। तुम शिवजी को प्रसन्न करो तब में दिव्यास्त्र दूँगा। यह कह कर इन्द्र अन्तर्धान हो गया।

अर्जुन और भगवान शिव (किरात) का युद्ध

अर्जुन भगवान शिव को प्रसन्न करना चाहते थे। उसने हिमालय पर्वत पर एक जगह तपस्या प्रारम्भ कर दी। एक दिन मूक नामक राक्षस आया। वह सूअर के वंश में था। वह राक्षस अर्जुन पर हमला करने वाला था। तभी अर्जुन ने बाण चलाया। वहाँ वन में एक किरात (भील शिकारी) घूम रहा था। उसने भी सूअर पर बाण चलाया। अर्जुन ने किरात से कहा– तुमने मेरे शिकार पर बाण क्यों चलाया। किरात ने कहा– यह मेरा शिकार है। अर्जुन और किरात में भयंकर युद्ध छिड़ गया। किरात ने अर्जुन के सारे अस्त्र–शस्त्र फूल की तरह मसल डाले।

फिर दोनों में मल्लयुद्ध शुरू हो गया। वे एक दूसरे को घूंसों से मारने लगे। अर्जुन को अनुभव हुआ कि यह साधारण किरात नहीं है। उसने मिट्टी का शिवलिंग बनाया। शिवलिंग की पूजा अर्चना की। तब किरात अपने असली रूप में आ गया। उसने कहा– ''मैं ही शिव हूँ।'' शिवजी ने अर्जुन को अपना पाशुपत अस्त्र दिया। फिर शिवजी अन्तर्धान हो गए।

– बाड़मेर (राजस्थान)

हिन्दी हिन्द देश की प्यारी भाषा

– साँवलाराम नामा

जय हिन्दी! जय देवनागरी!
जय-जय भाषा-लिपि-उजागरी!!
जन-गण-मानस-मध्य-विहारिणी,
राष्ट्र-एकता, संस्कृति धुर-धारिणी,
स्वाभिमान-रवि-रथ-सञ्चारिणी,
तुम ही हो भारत-जग सुख कारिणी,
जय स्वतंत्रता-छबि-उजागरी!
जय हिन्दी! जय लिपि-देवनागरी!!

हिन्दी हिन्द देश की प्यारी भाषा है। करोड़ों कण्ठों से बोली जाने वाली, पढ़ी-लिखी देश-विदेशों में प्यारी, अनूठी भाषा हिन्दी है। हमें अँग्रेजों से स्वतंत्रता दिलाने वाली भाषा हिन्दी है। हमारा राष्ट्र-ध्वज 'तिरंगा' है। राष्ट्र-गीत 'वन्दे-मातरम्' है। 'जन-गण-मन' राष्ट्र-गायन है। तो राष्ट्र-भाषा, राजभाषा, सम्पर्क मातृभाषा हिन्दी जो संस्कृति की संवाहक है। राष्ट्र गौरव गाथाओं से भरी महान् ग्रन्थों वाली भाषा हिन्दी है। विश्व को महान् कवियों को सुगंध देने वाली, सबके हृदयों को जोड़ने वाली भाषा है। गंगा नीर की भाँति सदा सबका हित करते बहने वाली पावन भाषा संस्कृत-पुत्री हिन्दी है। उत्तर में कश्मीर से दक्षिण कन्याकुमारी पश्चिम में कटक से पूर्व में असम तक बोली जाने हमारी हिन्दी गौरवशाली, लोकप्रिय भाषा हिन्दी है। जिसमें ऋषियों की ऋचाएँ, तप, त्याग हैं। जिसमें ओज, तेज, शौर्य, क्रांति, राष्ट्रप्रेम, एकता की भावना साहित्यकारों कवियों ने अपने खून का पानी बनाकर सिंचन किया है। जिसमें गजब की भावनात्मक एकता, मानव कल्याण दृष्टिगोचर होती है।

भारत के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में एक ओर जहाँ क्रान्तिकारियों के बलिदानों के जोश ने जन मानस के हृदय को उद्वेलित किया महात्मा गाँधी के शान्ति एवं अहिंसा के नारों ने सत्याग्रह की आँधी के साथ उनमें शक्ति का संचार किया, वही सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता- 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी' ने आग में घी का काम किया, मैथिलीशरण गुप्त की हिन्दी के उज्ज्वल भावना की कामना की-

''मानस-भवन में आर्यगण जिसकी उतारे आरती।
भगवान सारे विश्व में गूँजे हमारी भारती।''

रामधारी सिंह दिनकर जी ने जनता के साथ शासन को चुनौती देते कहा है-

''समर शेष है, जनगंगा को खुलकर लहराने दो,
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो।''

जैसे अनगिनत हिन्दी कवियों, कथाकारों, सम्पादकों, साहित्यकारों ने ओजस्वी, तेजस्वी राष्ट्रभक्ति की उदात्त भावनाएँ व्यक्त की जैसे माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा में-

''मुझे तोड़ लेना बन माली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।।''

और भी जन-मानस को अँग्रेजों के विरुद्ध अदम्य साहस से खड़ा होने में विशेष भूमिका को निभाया। स्वतन्त्रता से पूर्व जिस हिन्दी ने इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा कर अँग्रेजी को पददलित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी वहीं हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा घोषित होने के बावजूद क्यों पूरे देश की भाषा नहीं बन पाई? इतनी महत्वशाली हिन्दी भाषा की गरिमा 'रामगोपालसिंह नेपाली' जी ने लिखा है-

''हिन्दी में गुजराती का संजीवन है, मराठी का विनोद है, कन्नड़ का माधुर्य है एवम् संस्कृत का अजस्र स्रोत है। प्राकृत ने इनका शृँगार किया है और उर्दू के हाथों में मेहंदी लगायी है। यह आर्यों के

स्वरों में गाती है। हिन्दी संसार सागर में सतत् प्रवाहमान है और इस प्रवाह को रोकना भी असंभव है।''

अँग्रेजी ऐसे में भारत की जनसम्पर्क की भाषा नहीं है। जो लोग अँग्रेजी के पक्ष में तर्क देते हैं, वे इस महादेश की महान् आत्मा को नहीं पहचानते। गाँधी जी ने कहा था– ''बिना राष्ट्र भाषा के देश गूँगा है।'' अत: भाषा काल एवं घटनाचक्रों के साथ–साथ चलती है। आजादी की लड़ाई एवं अनंतर काल में हिन्दी भाषा ही जनसम्पर्क की भाषा रही है। हिन्दी ने ही प्रादेशिक दीवारों को तोड़कर विभिन्न भाषा–भाषियों को जोड़ा है। आज सम्पूर्ण देश में कामकाजी हिन्दी का प्रचलन है। दक्षिण प्रान्त हों या पूर्वोत्तर, सर्वत्र न केवल यह समझी जाती है, अपितु हिन्दी कार्यक्रम बड़े चाव से देखे भी जाते हैं। बाजार की आवश्यकता होने के कारण विदेशी कम्पनियाँ भी अपने विज्ञापन और प्रचार में हिन्दी का प्रयोग कर रही है। हिन्दी को हम लोकभाषा, जनभाषा, साहित्य, सम्पर्क, विपणन आदि क्षेत्रों में देख रहे हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के सपने को साकार कर समृद्ध कर रहे हैं। अच्छी हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ जितनी भारत में हैं उसका दशांश अँग्रेजी में नहीं है। जो हिन्दी भाषा असंख्य किसानों, मजदूरों, कामकाजी महिलाओं, रेल पर कुलियों, रिक्शा वालों, अनगिनत विद्यालयीन छात्र–छात्राओं, भैया–बहिनों, कवियों, शायरों, गाँधी, प्रेमचंद, लोहिया, मालवीय जी, गुरुजी, कबीर, रसखान, जायसी, रैदास, हजारों देशभक्तों, क्रान्तिकारी शहीदों, वीरांगनाओं, व्यापारियों, यहाँ तक अधिकारियों ने बोली–लिखी। उसकी महिमा–गरिमा को नष्ट न होने अपितु उसकी उन्नति में अपना खूब–पसीना एक करके अमर–अजर बनाये रखें तभी हिन्दी दिवस मनाना सफल होगा।

अत: हिन्दी भाषा की वह पगडण्डी है, जो सीधे लोगों के हृदय तक अपने आप पहुँचती है।

''सावरकर, दिनकर, निराला, प्रसाद, पंत ने संवारा इसे,
तन–मन–प्राण की प्रिय पुकार मेरी पावन हिन्दी है।
सूर, तुलसी, मीरा, महादेवी के, हृदय में निवास करे,
जन–जन–मन में बसी मातृभाषा प्राण प्रिय हिन्दी है।।''

भारत में हिन्दी प्रदेश सबसे बड़ा जातीय क्षेत्र है। हिन्दी भाषी जाति भारत की सबसे बड़ी जाति है। अत: उसका कर्त्तव्य है कि इस हिन्दी आन्दोलन में पहल करें। कई आन्दोलनों में वह पहल कर चुकी है, इसलिए उसे आत्मविश्वास होना चाहिए कि इस बार भी वह पहल कर सकती है, करेगी, राष्ट्रभाषा हिन्दी के हित के लिए और उसमें निश्चित तौर से सफलता मिलेगी।

जय भारती, जय नागरी लिपि।

– भीनमाल जालौर (राजस्थान)

ओजोन हमें बचाना है

– अंकुश्री

गाँव के बच्चे मैदान में फुटबॉल खेल रहे थे। आसपास के कई गाँवों और टोलों के बच्चे भी उपस्थित थे। वहाँ एक ही गाँव के चार मित्र प्रियेश, महेश, रवि और मोहन भी खेल रहे थे। जब खेल समाप्त हुआ तो वे चारों मित्र एक साथ अपने गाँव के लिए चल दिए। उनके गाँव का नाम चंदाघासी था। चारों मित्र चंदाघासी गाँव में एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गए। बरगद का वह पेड़ बहुत विशाल था। जो गाँव के बीच में था। बरगद पेड़ के चारों ओर पक्का चबूतरा बना हुआ था। आते-जाते लोग वहाँ बैठ कर विश्राम कर लिया करते थे।

बरगद के आसपास कोई घर नहीं था। इसलिए वहाँ का वातावरण खुला-खुला था। ठंडी शांत हवा चल रही थी। पेड़ के नीचे बैठे लोगों को बहुत आनंद आ रहा था। चारों मित्र फुटबॉल खेलने से थक गए थे। ठंडी हवा में कुछ देर बैठने के बाद उनकी थकावट समाप्त हो गई। चारों आपस में बात कर रहे थे। महेश ने कहा– ''कितनी अच्छी हवा चल रही है?''

''हाँ! लग रहा है कि हमलोग ए. सी. में बैठ हुए हैं।'' प्रियेश ने कहा– ''लेकिन यहाँ बैठने और ए. सी. में बैठने में बहुत अंतर है। ए. सी. की हवा बंद कमरे तक सिमटी होती है और यहाँ की हवा खुली-खुली है। हवा को हम तक पहुँचने में कोई रुकावट नहीं है।'' प्रियेश शहर में रहता था और छुट्टियों में गाँव आता था।

महेश ने कहा– ''मुझे पता है कि शहर वाले तुम्हारे घर में ए. सी. लगा हुआ है। मैं तुम्हारे यहाँ गया था तो देखा था। वहाँ तीन कमरे हैं। तीनों कमरों में ए. सी. लगा हुआ है।''

''जानते हो? शहर में हमलोग जहाँ रहते हैं, वहाँ प्राय: सभी घरों में ए. सी. लगा हुआ है।'' प्रियेश की इस बात पर मोहन ने कहा– ''ए. सी. के उपयोग से ठंडक तो मिलती है, किन्तु उससे जो गैसें निकलती हैं, वे बहुत खराब प्रभाव छोड़ती हैं। वे गैसें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ही, पर्यावरण के लिए भी घातक हैं।'' ''वह कैसे?'' मोहन ने जानना चाहा।

''ए. सी. या फ्रीज को ठंडा करने के लिए उसमें गैस भरी जाती है। उपयोग के बाद वह गैस बहुत नुकसानदेह हो जाती है।'' मोहन ने सबको बताया। उसको पता था कि ए. सी. से हाइड्रोफ्लोरोकार्बन और क्लोरोफ्लोरोकॉर्बन गैसों का उत्सर्जन होता है। उन गैसों से प्रकृति में पराबैंगनी किरणों का स्तर बढ़ जाता है, जो ओजोन परत के लिए बहुत हानिकारक है। उसने आगे बताया, ''हम सभी को पता है कि शहरों में ऊँची-ऊँची इमारतें बनी हुई हैं। एक ही परिसर की ऐसी इमारतों में हजारों घर होते हैं। शहरों और महानगरों में ऐसे आवासीय परिसरों की संख्या हजारों में है। ऐसी ऊँची-ऊँची इमारतों का बनना लगातार जारी है। बढ़ती हुई आबादी के कारण यह सिलसिला कभी समाप्त होने वाला नहीं है। हर घर में दो से चार कमरे हैं और सबमें ए. सी. लगे हुए हैं।''

मोहन की बात सुनकर प्रियेश ने कहा– ''जब ए. सी. की बात चलती है तो हम लोग घरों में लगे ए. सी. के बारे में सोचने लगते हैं। किन्तु ए. सी. केवल घरों में नहीं लगे हुए हैं। इसका प्रयोग अनेक स्थान पर होता है। प्राय: सभी चार-पहिया वाहनों में ए. सी. लगे होते हैं। रेलगाड़ियाँ भी अब ए. सी. वाली ही अधिक बन रही हैं। वायुयान में भी लोग ए. सी. का मजा लेते हुए उड़ान भरते हैं। अधिकतर कार्यालयों में भी ए. सी. लगा रहता है। निजी प्रतिष्ठानों के कार्यालय तो बिना ए. सी. के बनते ही नहीं है। कल-कारखानों में भी ए. सी. का भरपूर उपयोग होता है। ए. सी. विद्युत चालित यंत्र है। विद्युत उत्पादन के लिए प्रयुक्त ईंधन के जलने

से भी प्रकृति का तापमान बढ़ता है। ए. सी. में बैठने–सोने से गर्मी से राहत मिल जाती है और लोग प्रसन्न हो जाते हैं। ए. सी. का उपयोग केवल हमारे शहर या देश तक ही सीमित नहीं है। इसका प्रयोग विश्वस्तर पर हो रहा है। इसके प्रयोगकर्ताओं को भले ठंड का आनंद मिल जाता है, किन्तु इससे धरती का तापक्रम बढ़ जाता है। इसी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।''

''तब तो ए. सी. के प्रयोग से बचना चाहिए?'' रवि ने जिज्ञासा की।

''तुम सही कहते हो। किन्तु आज के दौर में ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि लोग ए. सी. पर आवश्यकता से अधिक निर्भर हो चुके हैं।'' यह मोहन की आवाज थी। उसने आगे कहा– ''बता दूँ कि ए. सी. से निकलने वाली गैसों के प्रभाव से साँस, त्वचा और एलर्जी की समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसीलिए बच्चों और बुजुर्गों को ए. सी. में अधिक देर तक नहीं रहने की सलाह दी जाती है। ठंडी हवा के लिए तुरंत ए. सी. ऑन नहीं कर पहले घर के दरवाजों और खिड़कियों को खोलना चाहिए। जब उससे काम नहीं चले तो पंखा चलाना चाहिए। ए. सी. का उपयोग आवश्यकतानुसार सबसे अंत में करना चाहिए। सुविधा के चक्कर में आलसी नहीं बनना चाहिए। इस तरह भी ए. सी. के दुष्प्रभाव को कुछ कम किया जा सकता है।''

मोहन की बातें सुनकर प्रियेश ने कहा– ''जब हम पर्यावरण की बात करते हैं तो ओजोन परत की भी बात होती है। हमें यह पता होना चाहिए कि ओजोन परत लोहा का कोई मोटा चदरा नहीं है, जिसमें छेद करने के लिए भारी–भरकम ड्रिलिंग मशीन की जरूरत पड़े। ओजोन परत आकाश में एक ऐसी अदृश्य परत है, जो पर्यावरणीय प्रदूषण की गतिविधियों से प्रभावित होती है।''

प्रियेश और मोहन की बातें रवि बहुत गंभीरता से सुन रहा था। उसने कहा, ''मैं इस बात में विश्वास करता हूँ कि हर समस्या का समाधान होता है। हमारा काम है उस समाधान को ढूँढ़ना। ए. सी. हो या प्रदूषण फैलाने वाले अन्य कारक, हमें उनकी पहचान कर उनसे निपटने का मार्ग खोजना होगा।''

रवि की बात बहुत गंभीरतापूर्ण थी। उसे सुन कर सभी सोच में पड़ गए। कुछ देर तक सोचते रहने के बाद महेश ने कहा– ''प्रदूषण कम करने में पेड़ों का बहुत बड़ा योगदान है। इसलिए अधिक से अधिक पेड़ लगाना ही इस समस्या का समाधान है। जितना अधिक पेड़ लगाए जाएँगे, प्रदूषक तत्वों को उतना अधिक निष्क्रिय किया जा सकता है।''

पेड़ों से ऑक्सीजन उत्सर्जित होने की बात सबको पता थी। ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध रहने से वायुमंडल की विषैली या हानिकारक गैसों का दुष्प्रभाव कम हो जाता है। प्रियेश ने कहा– ''हमारे आसपास जितने पेड़ दिख रहे हैं, इन सभी से हमें ऑक्सीजन मिलता है। हम लोग यहाँ बरगद पेड़ के नीचे बैठे हुए हैं। बरगद पेड़ से सामान्य से अधिक मात्रा

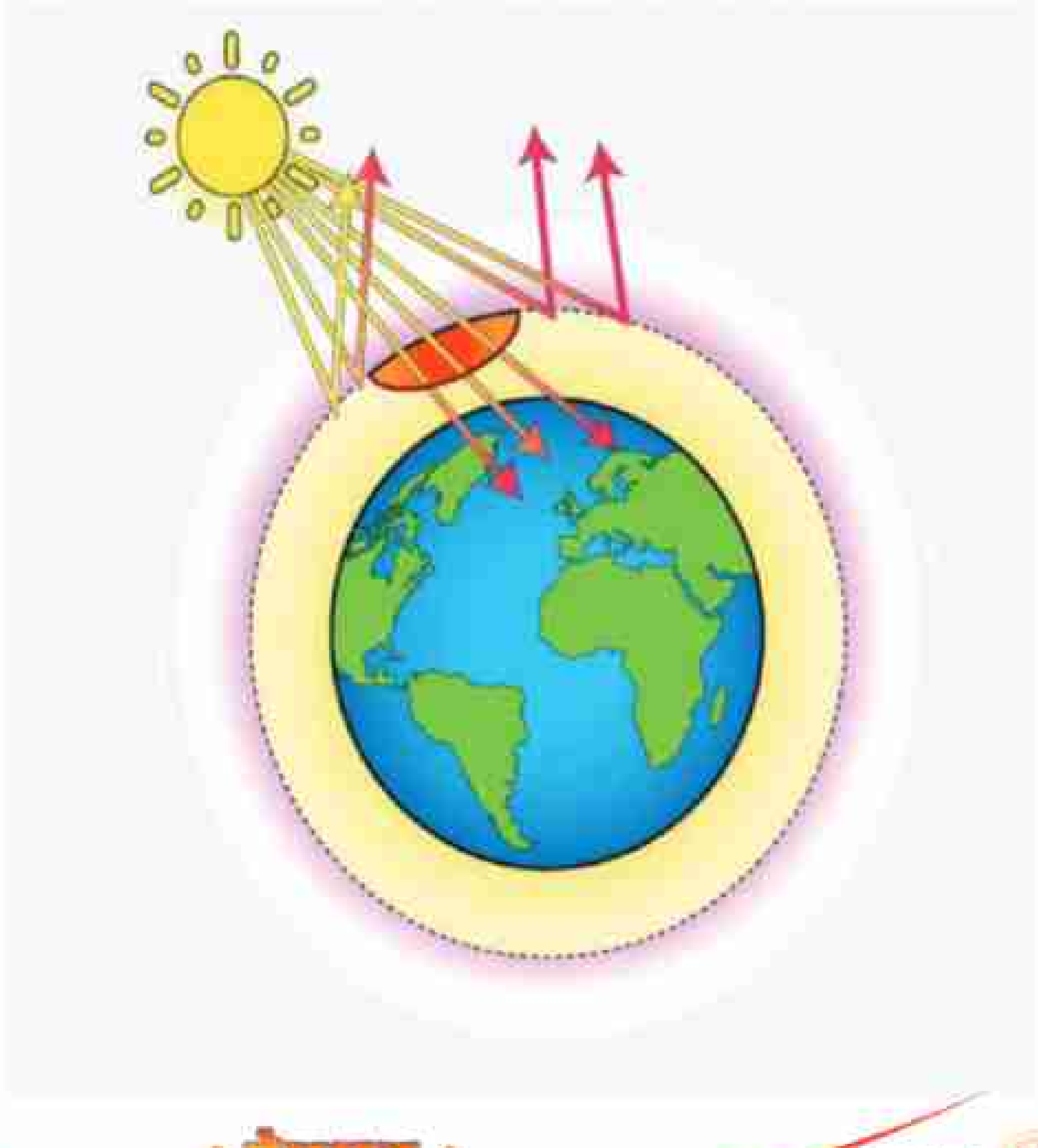

में ऑक्सीजन प्राप्त होता है। अधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करने वाले कुछ अन्य पेड़ हैं आम, नीम, जामुन, अशोक आदि। एक बात हम सबको पता है कि पीपर के पेड़ से हमें दिन और रात हर समय ऑक्सीजन मिलता है। उसी तरह पाकड़, तुलसी, एलोवेरा, मनीप्लांट आदि कुछ पौधों से भी दिन-रात ऑक्सीजन उत्सर्जित होता है।''

महेश सबकी बातें गौर से सुन रहा था। उसने कहा- ''हम खान-पान के स्वाद, संगीत का आनंद और खेल-कूद का आनंद प्रत्यक्षरूप से अनुभव कर लेते हैं। मगर पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले अधिकतर कारकों को देख-परख नहीं पाते हैं। पर्यावरणीय गतिविधियाँ भी हमें दिखाई नहीं देती हैं। हम केवल उनके प्रभाव को अनुभव करते हैं। इसलिए पर्यावरण के कुप्रभाव को कम करना बहुत आवश्यक है। इसका सबसे कारगर उपाय है अधिकाधिक पेड़ लगाना।''

''पेड़ लगाने का काम हम लोग आरंभ तो कर सकते हैं, किन्तु सीमित संसाधनों से उसे विस्तार नहीं दे सकते हैं।'' यह रवि की आवाज थी।

''तब हमें क्या करना चाहिए?'' मोहन ने प्रश्न किया।

''मैं वही तो बताने जा रहा हूँ।'' रवि ने कहा, - ''हम लोग अपनी बात प्रधान जी को बताएँ। यदि वे हमारे प्रस्ताव से सहमत हो जाएँगे तो काम बहुत सरल हो जाएगा और कार्यक्रम को विस्तार भी मिल जाएगा।''

रवि की बात से सभी सहमत हो गए। चारों मित्र ग्राम प्रधान के घर पहुँच गए। बच्चों की बात सुनकर ग्राम प्रधान बहुत प्रसन्न हुए। दो मिनट सोचने के बाद उन्होंने कहा- ''हमारे गाँव में पेड़ों की कमी नहीं है। किन्तु बेकार और खाली स्थान भी बहुत हैं। बहुत सारी भूमि ऐसी हैं, जिन पर खेती नहीं हो पाती। उन स्थानों पर पेड़ लगाए जा सकते हैं।''

कुछ रुककर उन्होंने आगे कहा- ''सुनो बच्चो! तुमसे बातचीत के बाद मुझे लगता है कि यह काम बहुत आवश्यक है। किन्तु केवल दस लोगों द्वारा यह काम पूरा नहीं किया जा सकता है। दस लोग पौधा लगा कर ताली बजाएँगे और एक-दूसरे की पीठ थपथपा कर कार्यक्रम पूरा कर देंगे। मेरे विचार से इस कार्यक्रम को बृहद् रूप देने की आवश्यकता है। कितना अच्छा लगेगा जब अपनी प्यारी-प्यारी धरती के तन पर हरा-भरा वन रहेगा।''

''आपका कहना सही है।'' मोहन ने कहा।

''कल रविवार है। छुट्टी के दिन बहुत लोग शहर से अपने घर आते हैं। उन सबों के साथ मिलकर इस दिशा में कुछ करने से कार्यक्रम को अधिक बल मिलेगा। पर्यावरण संरक्षण अथवा वृक्षारोपण ऐसा काम है, जो सबको साथ लेकर चलने से अधिक प्रभावी हो सकता है।'' उन्होंने बच्चों को लड्डू खिला कर विदा किया।

दूसरे दिन ग्यारह बजे बगीचा में गाँव वालों की भीड़ उमड़ पड़ी। बैठक में सभी ने गाँव में वृक्षारोपण किए जाने की बात की सराहना की। लोग शारीरिक और आर्थिक दोनों प्रकार से सहयोग के लिए तैयार हो गए। प्रधान जी ने कहा- ''वर्षा प्रारंभ होने में अभी दो महीना देर है। लेकिन हम लोग अभी से पौधा लगाने के लिए गड्ढा खोदने की तैयारी शुरू कर देंगे।''

सबकी सहमति से कार्यक्रम की रूपरेखा तय हो गई। यह भी तय हो गया कि जुलाई महीना के पहले रविवार को पौधा लगाने का काम प्रारंभ किया जाएगा। उस दिन की बैठक समाप्त हो गई। प्रधान जी ने दूसरे दिन से ही भूमि की पहचान कर गड्ढा खोदवाने का काम शुरू करा दिया। चारों बच्चे बहुत खुश थे कि ओजोन बचाने के उनके संकल्प की तैयारी शुरू हो गई है।

- राँची
(झारखंड)

जुलाई २०२५ का देवपुत्र का अंक देखकर मन मीठी फुहार से भीग उठा। बच्चों के खिले हुए चेहरे, जल की बूँदें और मीठे जामुन, सब मिलकर एक बहुत ही प्यारा समा रच रहे हैं। बड़े भैया की पाती में श्री गोपाल माहेश्वरी जी ने गुरु के महत्व को अच्छे से समझाया है।

श्रीमती सुकीर्ति भटनागर जी की कविता 'माँ की रसोई' तरह-तरह के व्यंजनों की सुगंध बिखेर रही है। श्री कल्याणमय आनंद जी की कविता 'वीर उधम सिंह', बच्चों में देश प्रेम का जोश भरती हुई प्रतीत होती है। श्रीमती सुमन वाजपेई की कहानी 'जादुई एडवेंचर' रोचक ढंग से लिखी गई कहानी है जो बच्चों में जिज्ञासा और हिम्मत की प्रेरणा देने के साथ चुपके से संदेश भी दे जाती है। श्रीमती पवित्रा अग्रवाल की कहानी 'जानवेला शौक' बच्चों के मोटरसाइकिल स्टंट के खतरों को रेखांकित करता है। श्रीमती नीना सिंह सोलंकी की कहानी 'चमकी बिजली' रोचक ढंग से लिखी गई है। श्री रामगोपाल राही जी की कहानी, 'कहानी अपने चंदा मामा की' बच्चों को चंद्रमा से जुड़ी अनेक जानकारियाँ हैं श्रीमती विमला रस्तोगी की कहानी 'सच्चा साथी' महत्वपूर्ण विषय पर बहुत रोचक ढंग से लिखी, बहुत प्यारी कहानी है।

अनुवाद के अंतर्गत श्री राजीव तांबे की कहानी 'मोरु' प्रभावित करती है। अलग अंदाज में लिखी हुई कहानी मोर से जुड़ी हुई अनेक बातें बच्चों को रोचक ढंग से बता जाती है। इसका अनुवाद डॉ. विशाखा ठाकुर जी ने किया है।

देवपुत्र का एक स्तंभ जो विशेष रूप से रेखांकित होना माँगता है वह है, 'बाल साहित्य की धरोहर' जिसके माध्यम से डॉ. नागेश पांडे 'संजय' बच्चों को महान साहित्यकारों से परिचित करा रहे हैं।

श्री मोहनलाल जोशी की लेखनी के माध्यम से बच्चों को महाभारत की कहानी से परिचित कराने का महान कार्य देवपुत्र कर रहा है, जो सराहनीय है। इस अंक में पांडवों के वनवास और अक्षय पात्र की कहानी बताई गई है। श्री दिनेश दर्पण की लिखी कहानी 'मित्रता का महत्व' के माध्यम से बाल पाठक, महान पृथ्वीराज चौहान के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना से परिचित हो सकेंगे। बाल लेखनी के अंतर्गत सुश्री खुशी चंदोवा की कविता 'ऑपरेशन सिंदूर' बहुत उम्मीद जगाती है। बच्चों की कलम जब अच्छा साहित्य रचेगी तो बाल साहित्य की उन्नति को कोई रोक नहीं पाएगा। 'बच्चे विशेष' के अंतर्गत 'मैं संभव हूँ: केया हटकर' बहुत ही प्रेरक है। इसके लेखक श्री. रजनीकांत शुक्ल हैं। कहानी 'दोस्त की चिंता' श्री. हेमंत यादव जी की दिशा दिखाती, प्रेरक रचना है। श्री. नारायण चौहान जी अपने आलेखों के माध्यम से संघ के बारे में जानकारी दे रहे हैं। यह प्रशंसनीय है।

सुश्री. नीलू सोनी की लिखी कहानी 'बुंदा आखिर कहाँ गया?' बच्चों को गुदगुदा कर उनके चेहरे पर मुस्कान ले आएगी। 'बादल फटते क्यों हैं?' शीर्षक के अंतर्गत सुश्री सावित्री शर्मा सवि ने बादल से संबंधित बहुत ही रोचक जानकारी दी है।

पत्रिका की साज-सज्जा, रचनाओं का चयन एवं त्रुटिहीन प्रकाशन संपादक के सामर्थ्य का परिचायक है। मैं खुले मन से पत्रिका और पत्रिका से जुड़े सभी लोगों को बधाई देना चाहती हूँ।

- नीलम राकेश, लखनऊ (उ. प्र.)

क्या गायब?

दूसरे चित्र में पहले की नकल करते समय बनाने से क्या रह गया है? बूझो.

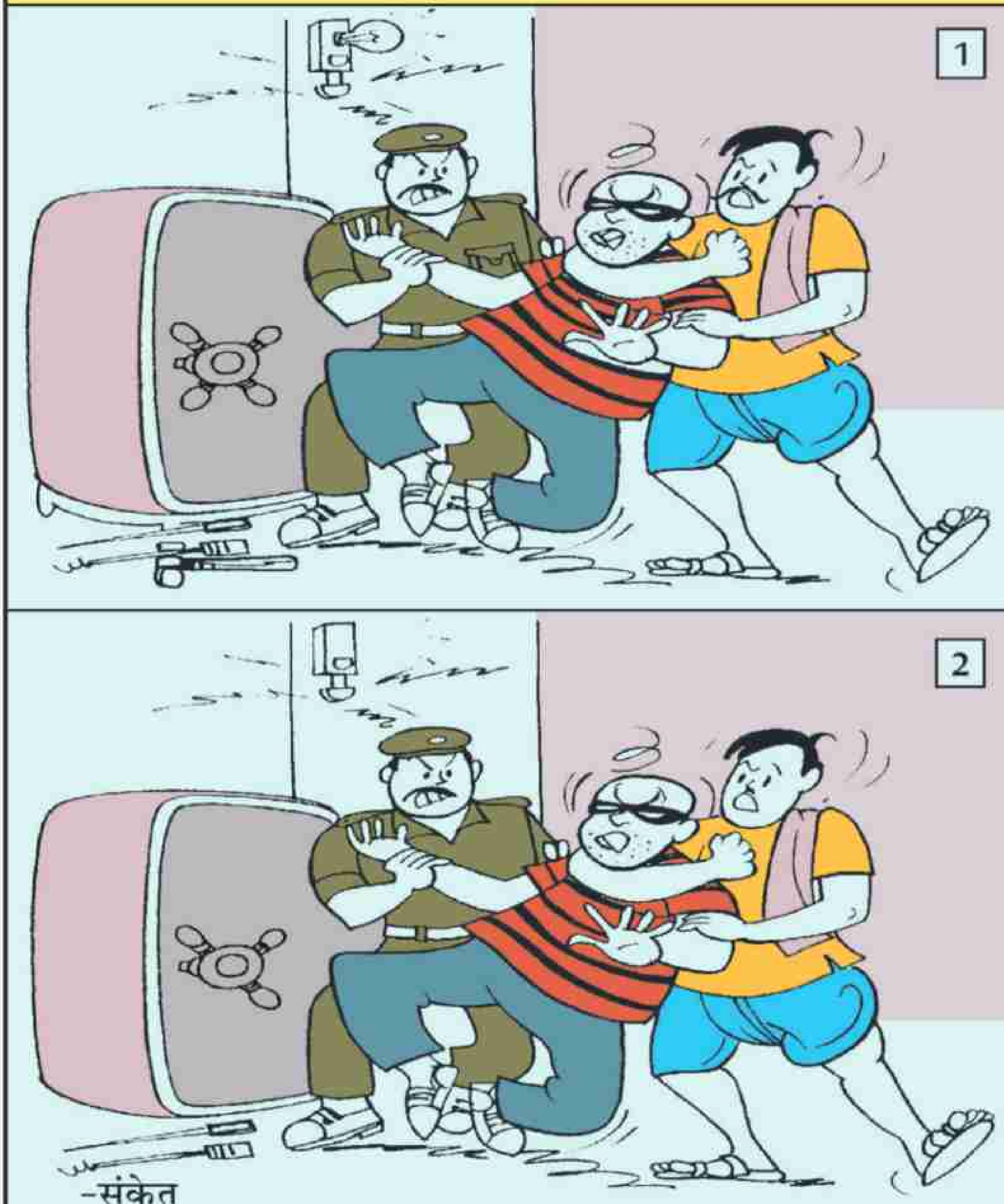

दूसरे चित्र में नहीं है 1.पीछे का बल्ब 2.चोर के दांत 3.उसकी कमीज की धारियां 4. तिजोरी का एक हत्था 5. पुलिस वाले की जेब 6. नौकर की मूंछें 7.नीचे पड़ी हथौड़ी 8. तिजोरी के पाये

कविता

हिंदी शान हमारी

– लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

हिंदी भाषा प्यारी–न्यारी,
सहज–सरल है बोली।
माँ के मीठी वाणी जैसी,
माथे चंदन रोली।।

दादी–नानी हमें सुनाएँ,
कविता, गीत, कहानी।
हिंदी भाषा में पढ़कर हम,
बने खूब ही ज्ञानी।।

देशभक्ति के हिंदी गाने,
सबको खूब सुनाएँ।
देशप्रेम के जब उत्सव हों,
जन–गण–मन हम गाएँ।।

तुलसी, सूर, कबीर, जायसी,
जग में ख्याति दिलाए।
भगवद्गीता, रामायण को,
हम पढ़ने को पाएँ।।

सभी विषय हिंदी में पढ़कर,
पढ़–लिख नाम कमाएँ।
हिंदी का सम्मान बढ़ेगा,
इसे अभी अपनाएँ।।

जग में यश फैले हिंदी का,
सबकी जिम्मेवारी।
हिंदी को हम दिल से चाहें,
सबकी बने दुलारी।।

हिंदी बोलें हम गर्वित हों,
हिंदी शान हमारी।
माँ, धरती, हिंदी, बिन हमको,
जीना है दुश्वारी।।

– बस्ती (उत्तर प्रदेश)

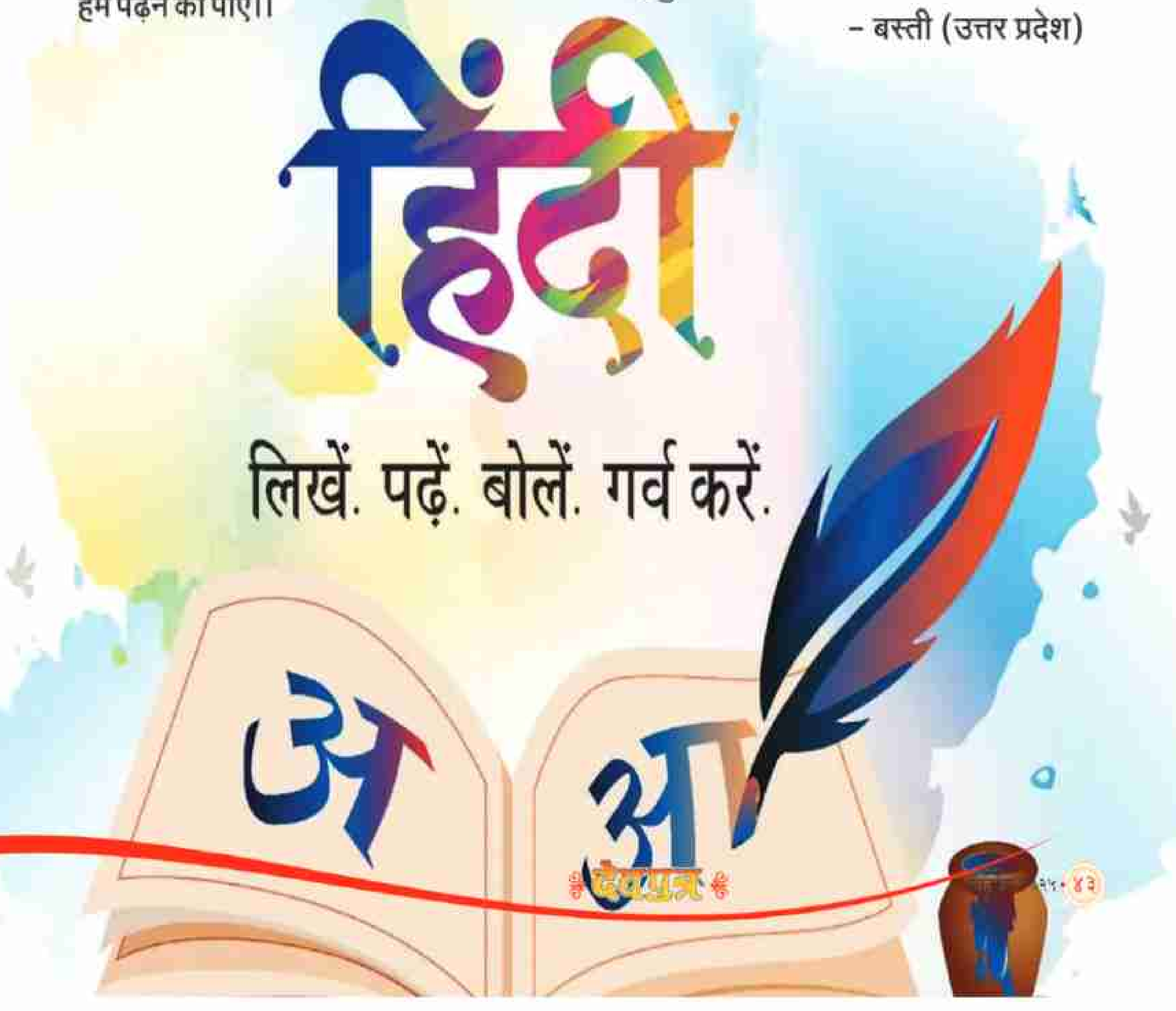

राम का उपहार
चित्रकथाः देवांशु वत्स
शिक्षक दिवस के दिन...
श्रीमान, मेरी तरफ से!
धन्यवाद सोहन!
श्रीमान, मेरी तरफ से!
कुछ देर बाद...
अरे! राम अभी तक नहीं आया!
तभी...
श्रीमान, मैं अंदर आ सकता हूं?
आओ।
राम, तुम क्या उपहार ले कर आए हो?
श्रीमान, मैंने अपने हाथों से आपकी तस्वीर बनाई है!
धन्यवाद राम!
और फिर...
वाह! बहुत सुंदर है!
वाह!
अद्‌भुत!

पुस्तक परिचय

गत अंक में हमने डॉ. विमला भण्डारी जी की संपादित बाल साहित्य की विविध विधाओं की कुछ संपादित कृतियों का परिचय प्राप्त किया है। यहाँ प्रस्तुत है इसी शृंखला की कुछ और कृतियाँ

बच्चों के ज्ञानवर्द्धक आलेख

मूल्य- २७५/-

आलेख प्राय: बाल साहित्य में कम रोचक माने जाते हैं। लेकिन आलेख किसी विषय को जितनी प्रामाणिकता से प्रस्तुत करते हैं उनका महत्व इसी से सिद्ध है। कुशल लेखकों के लिखे आलेख कथा-कहानी उपन्यास की भाँति ही रुचिकर बन जाते हैं। इस पुस्तक में प्रस्तुत हैं प्रकृति पर्यावरण, जीवनचर्या, खेल जगत, अंतरिक्ष और पौराणिक चरित्रों पर ३३ महत्वपूर्ण बाल आलेख।

प्रकाशक- साहित्यागार धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

पत्र तुम्हारे लिए

मूल्य- २५०/-

पत्र विधा नई तकनीकि के युग में लुप्त सी होती जा रही है या यों कहें कि इतनी रूपान्तरित हो गई है कि 'पत्र' कहे जाने वाले पारंपरिक रूप में अब कम ही मिलती है। लेकिन पत्र, संवाद के सशक्त माध्यम रहे हैं इस विधा को पुन:प्रतिष्ठित करने हेतु डॉ. विमला भण्डारी ने इस पुस्तक में ३७ लेखकों के बच्चों को लिखे पत्र संकलित व संपादित किए हैं।

प्रकाशक- ग्रन्थ विकास, -३७ राजपार्क, आदर्श नगर, जयपुर (राजस्थान)

आत्मकथाओं का सागर

मूल्य- २००/-

आत्मकथा यानि अपनी कहानी आप कहना। बड़ों के साहित्य से जब इस विधा ने बाल साहित्य में प्रवेश किया तो वह विविध वस्तुओं जैसे चॉकलेट, कागज, रेल आदि की आत्मकथा बनकर बच्चों को भा गई। प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. विमला भण्डारी ने ऐसी २१ बाल आत्मकथाएँ संपादित कर प्रस्तुत की हैं।

संयुक्त प्रकाशक- साहित्यागार धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान) एवं पं. जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी राज. १५, अकादमी संकुल झालाना सांस्थानिक क्षेत्र डूँगरी जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-३०२०११ (राज.)

हिंदी के बाल नाटक

मूल्य- २५०/-

डॉ. पूजा हेमकुमार अलापुरिया 'हेमाक्ष' बाल साहित्य जगत में तेजी से स्थापित होता एक नए युग का नाम है। प्रस्तुत संकलन में डॉ. पूजा ने २० बाल नाटक प्रस्तुत किए हैं।

प्रकाशक- वंश पब्लिकेशन शाप नं. १०२, प्रथम तल कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, चौहान टाउन, भिलाई-४९००२० (छत्तीसगढ़)

प्रसंग

हिन्दी की शक्ति

– श्याम सुन्दर 'सुमन'

एक बार नई दिल्ली में पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में श्री. लाल बहादुर शास्त्री जी को प्रमुख वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। शास्त्रीजी को सरकारी हिन्दी भाषा नीति के बारे में अपने विचार व्यक्त करने थे। उन्होंने तो हिन्दी की महत्ता व गुणवत्ता पर बोलते हुए कहा– ''मेरी पत्नी पुराने विचार वाली व हिन्दी भाषा जानने वाली है। इसलिए मेरी खूब सेवा करती है। हिन्दी ने ही मेरा आदर्श घर बसाया है। धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से पति सेवा का पुण्य मिलता है। इसीलिए वह हिन्दी पुस्तकें ही पढ़ती हैं। यदि वह अँग्रेजी पढ़ी होती तो वह ऐसी सेवा कभी नहीं करती। इतना सुनते ही सभा में हँसी का वातावरण फैल गया।

आगे शास्त्री जी ने कहा– मेरी हिन्दी वेशभूषा को भी कुछ लोग पसन्द नहीं करते। नेहरू जी तो क्रोधित होते हैं कि मैं धोती क्यों पहनता हूँ। पजामा शेरवानी क्यों नहीं पहनता हूँ? पर मुझे तो मेरी भारतीय हिन्दी धोती ही पसन्द है। देखिए अपनी हिन्दी वेशभूषा के कारण ही मैं प्रधानमंत्री का विरोध भी कर सकता हूँ। यही है मेरी हिन्दी वेशभूषा की शक्ति जो हिन्दी भाषा की ही है।

– भीलवाड़ा (राजस्थान)

पुरस्कार

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२५

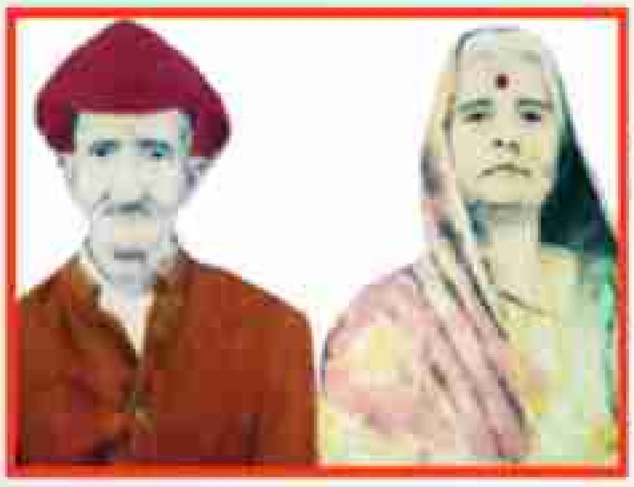

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा। आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२५ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम- १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र-४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२५

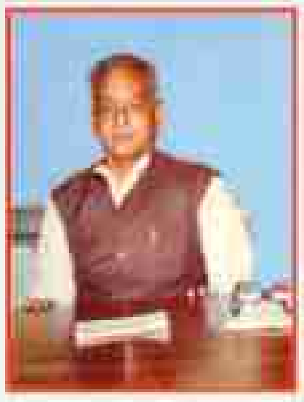

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक-बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय ११००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'यात्रा वृत्तान्त' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित यात्रा वृत्तांत की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/- होगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२५

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था विषय पर केन्द्रित बाल कहानियाँ' निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय १२००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

समझो, अपनाओ, आगे बढ़ो

– नारायण चौहान

प्रिय बच्चो! मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कोई भवन नहीं, मात्र संगठन नहीं कोई आंदोलन नहीं– मैं तो एक चेतना हूँ, एक विचार हूँ, मैं सांस्कृतिक भारत की जीवित परंपरा हूँ।

मुझे सामाजिक जीवन में कार्य करते हुए सौ वर्ष हो गए। एक लम्बा अनुभव प्राप्त किया है मैंने। मुझे लगता है जब तक समाज को स्व का बोध, कर्त्तव्य का बोध, कण–कण में भगवान देखने की दृष्टि, जातिपाँति से ऊपर उठकर समरसता की भावना, और कुटुंब के प्रति अहेतु प्रेम और एकता नहीं होगी तब तक यह देश शक्तिशाली नहीं होगा।

ऐसा शीघ्र से शीघ्र हो इसलिए पाँच संकल्प जो मैंने भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए चुने हैं। इन्हें समझो, अपनाओ, और आगे बढ़ाओ।

१) स्व का बोध– स्वयं को जानो, देश को जानो। मैं चाहता हूँ कि मेरे भारत के बच्चे अपने स्वभाव, संस्कृति और सभ्यता को पहचानें। जब तुम भगतसिंह, झाँसी की रानी, स्वामी विवेकानंद को पढ़ते हो, तो तुम्हारे भीतर आत्मबल जागता है– यही स्व का बोध है।

मेरी शाखाओं में बाल स्वयंसेवकों को कहानियाँ सुनाई जाती है भारत का इतिहास बताते हैं और उन्हें बताते हैं कि वे स्वयं में कितना सामर्थ्य रखते हैं।

२) नागरिक कर्त्तव्य बोध

बच्चो! कोई भी देश तभी महान बनता है जब उसके नागरिक अपने कर्त्तव्यों को समझें। शाला जाना, माता–पिता की सेवा करना, साफ–सफाई रखना, ये सभी सामान्य कर्त्तव्य हैं।

शाखा में मैं बालक यह सीखते हैं कि झूठ न बोलें, अनुशासन में रहें, दूसरों की सहायता करें, और राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करें। बच्चों में नागरिक कर्त्तव्य बोध विकसित करना उनके चरित्र निर्माण और देश के प्रति जिम्मेदारी की भावना जगाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मेरे स्वयंसेवक सिखाते हैं कि देशभक्ति का भाव– राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना। स्वतंत्रता सेनानियों का आदर करना, कानून का पालन, यातायात नियमों का पालन करना, अनुशासित रहना; स्वच्छता स्वच्छ भारत अभियान में भागीदारी। समय की पाबंदी जैसे विद्यालय समय पर पहुँचना, कार्यों को समय पर पूरा करना। मानवता और सहानुभूति बुजुर्गों, कमजोरों और विकलांगों की सहायता करना सभी के साथ विनम्रता और सहानुभूति से पेश आना समानता का व्यवहार।

जाति, धर्म, भाषा, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव न करना सबको समान अधिकार समझना। पर्यावरण की रक्षा पेड़ लगाना, जल और बिजली की बचत करना। प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना। राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा। विद्यालय, उद्यान, पुस्तकालय आदि की चीजों को नुकसान न पहुँचाना। सार्वजनिक साधनों का सही उपयोग करना। लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान। विचारों की अभिव्यक्ति का अधिकार और दूसरों के विचारों का सम्मान। कर्त्तव्य और अधिकार में संतुलन बनाना।

३) पर्यावरण संरक्षण

पृथ्वी हमारी माता है। यदि हम नदी, वायु, वृक्ष, और पशु–पक्षियों की रक्षा नहीं करेंगे, तो हमारा भविष्य भी सुरक्षित नहीं रहेगा।

मेरे स्वयंसेवक पौधारोपण करते हैं, प्लास्टिक हटाने के अभियान चलाते हैं। मैं चाहता हूँ पाठशालाएँ शिक्षा के पवित्र काम में ये संस्कार भी जोड़ें।

पर्यावरण संरक्षण हेतु आपके द्वारा किए जा

सकने वाले छोटे-छोटे कार्य।

पौधारोपण और संरक्षण।

१) प्रत्येक बच्चे द्वारा वष में कम-से-कम एक पौधा लगाना और उसकी देखभाल करना।

२) शाला परिसर में 'एक कक्षा एक पौधा' अभियान।

३) पेड़ मित्र अभियान बच्चों को किसी एक पेड़ का संरक्षक बनाना।

४) टपकते नल को देख तुरंत शिक्षक या घरवालों को बताना।

५) ब्रश करते समय नल बंद रखना।

६) वर्षा जल संचयन के मॉडल बनाना।

७) 'जल है तो कल है' पर पोस्टर बनाना।

स्वच्छता

८) कक्षा और शाला परिसर की साप्ताहिक स्वच्छता।

९) स्वच्छता गीत या नारा तैयार कर रोज गाना।

१०) घर और मुहल्ले में सूखा/गीला कचरा अलग-अलग डालने का अभ्यास।

११) स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग।

१२) बच्चों से कपड़े की थैली बनवाना और उसका उपयोग सिखाना।

१३) विद्यालय के प्रोजेक्टस् में पुरानी वस्तुओं का पुन: उपयोग।

१४) प्लास्टिक बोतलों से पेन स्टैंड या गमले बनाना।

प्राणी संरक्षण

१५) पक्षियों के लिए छोटे पानी के बर्तन रखना।

१६) गौशाला दर्शन और गाय की उपयोगिता पर चर्चा।

१७) पशु-पक्षियों के साथ दयालु व्यवहार पर कहानियाँ सुनना/बनाना।

प्रकृति वंदन और ध्यान

१८) सुबह शाखा या प्रार्थना के बाद 'प्रकृति वंदना' या ध्यान।

१९) बच्चों को सूर्य नमस्कार सिखाना और उसका अभ्यास कराना।

रचनात्मक कार्य

२०) पर्यावरण संरक्षण पर चित्रकला/निबंध/कविता प्रतियोगिता।

२१) पर्यावरण दिवस या पृथ्वी दिवस पर मंचीय कार्यक्रम नाटक, गीत, घोष आदि।

२२) पर्यावरण विषयक कहानी लेखन जिसमें बच्चे स्वयं समाधान सुझाएँ।

२३) संपत्ति और संसाधनों का सम्मान।

२४) बिजली की बर्बादी न करना- बिना आवश्यकता के पंखा/बत्ती न जलाना।

२५) सार्वजनिक स्थलों जैसे उद्यान या विद्यालय की चीजों को नुकसान न पहुँचाना।

२६) भोजन जितना हमें आवश्यकता हो उतना ही लेना। अधिक भोजन लेकर उसे व्यर्थ नहीं करना।

(शेष दो संकल्पों की चर्चा अगले अंक में)

- इन्दौर (म. प्र.)

पढ़ने का शौक

– पावनी पांडे

शौनक के दादा–दादी कबाड़ वाले को बैठाकर रद्दी निकाल रहे थे। दस वर्ष के शौनक को भी दादा–दादी की सहायता करने में बहुत आनंद आता था। सो वह भी सहयोग करने लगा। दादा–दादी को पढ़ने का बहुत शौक था। इस समय रद्दी वाले के सामने अनगिनत पत्रिकाओं को ढेर लगता जा रहा था। शौनक ने उलट–पलट कर देखा। सेहत, योग, संगीत, हास्य आदि की मजेदार पत्रिकाएँ थीं। शौनक ने दादा–दादी से अनुरोध किया कि–

''इन अच्छी पत्रिकाओं के तो केवल साठ–सत्तर रुपये ही मिल रहे हैं। आप यदि मेरी बात मानो तो बाकी चीजें जैसे लोहा–लंगड़, पुराने डिब्बे, बोतल आदि तो आप इन रद्दी वाले को बेच दो। किन्तु यह महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ मुझे दे दो। मैं अपनी शाला के चपरासी काका को दे दूँगा। वह पढ़ने के बहुत ही शौकीन हैं। किन्तु इतनी महँगी पत्रिकाएँ वे खरीद नहीं सकते हैं।''

यह बात सुनकर दादा–दादी बहुत प्रसन्न हुए। शौनक ने उनको बताया कि वह जितनी भी बाल पत्रिका पढ़ता है वह दूध वाले काका को देता है। उनके परिवार में जितने बच्चे हैं सभी उन बाल पत्रिकाओं को चाव से पढ़ते हैं।

''शाबाश शौनक! यह लो।'' कहकर दादा–दादी ने उसको उन पत्रिकाओं का पूरा बंडल ही थमा दिया।

अगले दिन जब शौनक ने उनको ढेर सारी पत्रिकाएँ दी तो उनकी आँखों में आँसू भर आए। वह बोले कि– ''शौनक! बहुत–बहुत धन्यवाद। तुमने मेरा इतना ध्यान रखा।''

मैं ऐसा सोच रहा हूँ कि मेरी बस्ती में भी कुछ गरीब लोग हैं। वह पत्रिका खरीदने की सपने में भी नहीं सोच सकते। उनको यह सभी अच्छी और उपयोगी पत्रिकाएँ पढ़ने को दूँगा।

शौनक के इसी व्यवहार के कारण आज उसे हर कोई पसंद करता है।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

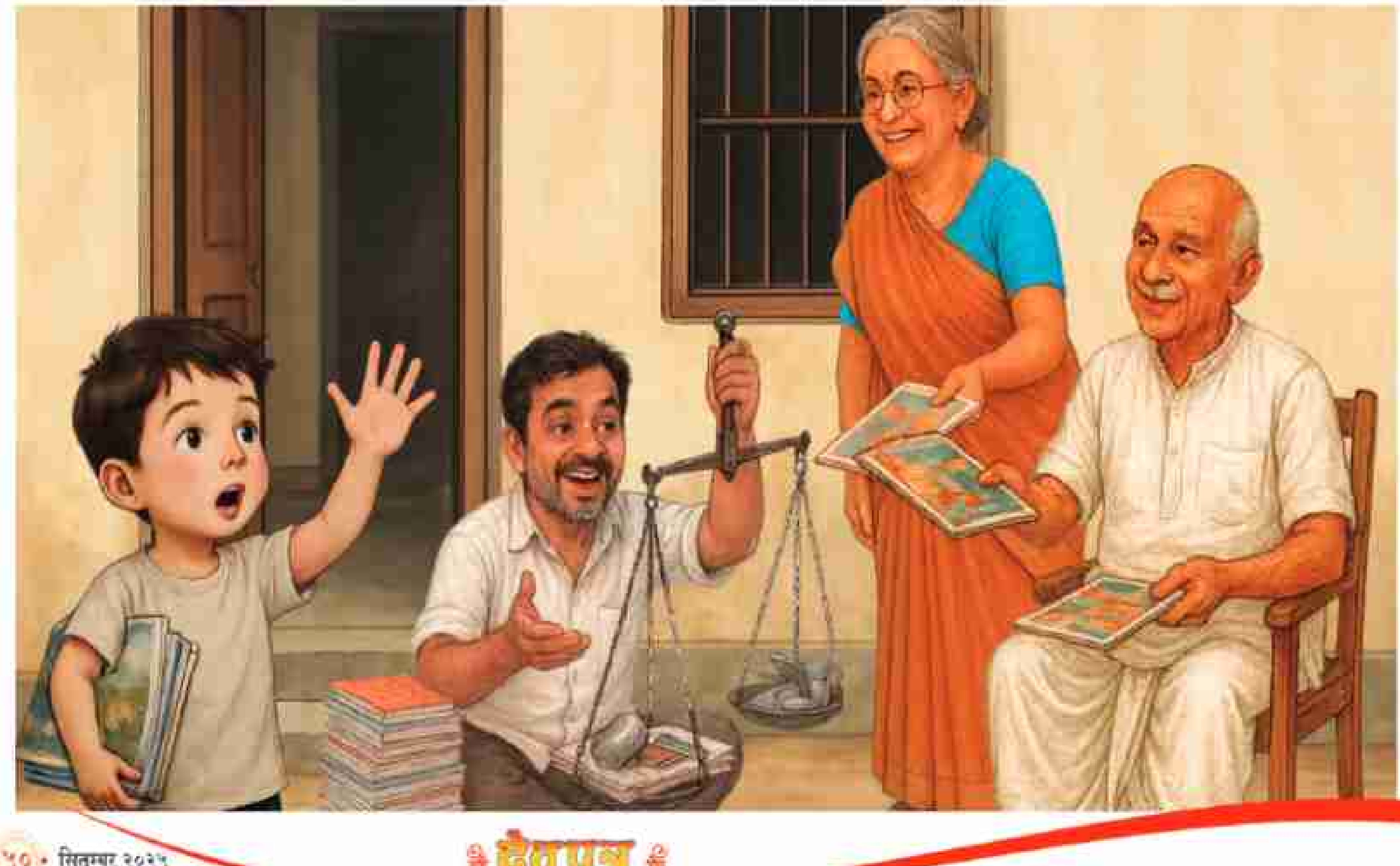

कविता

बंटी बंदर की परेशानी

– डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
– जालौन (उत्तर प्रदेश)

आसमान में सोन चिरैया,
उड़ती उड़ती जाए।
उसे देख कर बंटी बंदर,
जोर–जोर चिल्लाए।।

मैं भी उड़ना चाहूँ अम्मा,
नभ में उडता जाऊँ।
उडकर नभ को मैं भी छू लूँ,
तारे गिन मैं आऊँ।।

पंख नहीं क्यों मेरे अम्मा,
भू पर चलता रहता।
काला कौवा मुझे चिढ़ाकर,
खूब उड़ानें भरता।।

उसे बंदरिया कहे प्यार से,
बात सुनो तुम पूरी।
ईश्वर ने उसको वह सौंपा,
जो है उसे जरूरी।।

अगर पंछियों को पर सौंपे,
तुम्हें विवेक दिया है।
बुद्धिमान कहलाते तुम भी,
उनसे न्याय किया है।।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०२५ | प्रेषण तिथि ३०/०८/२०२५ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

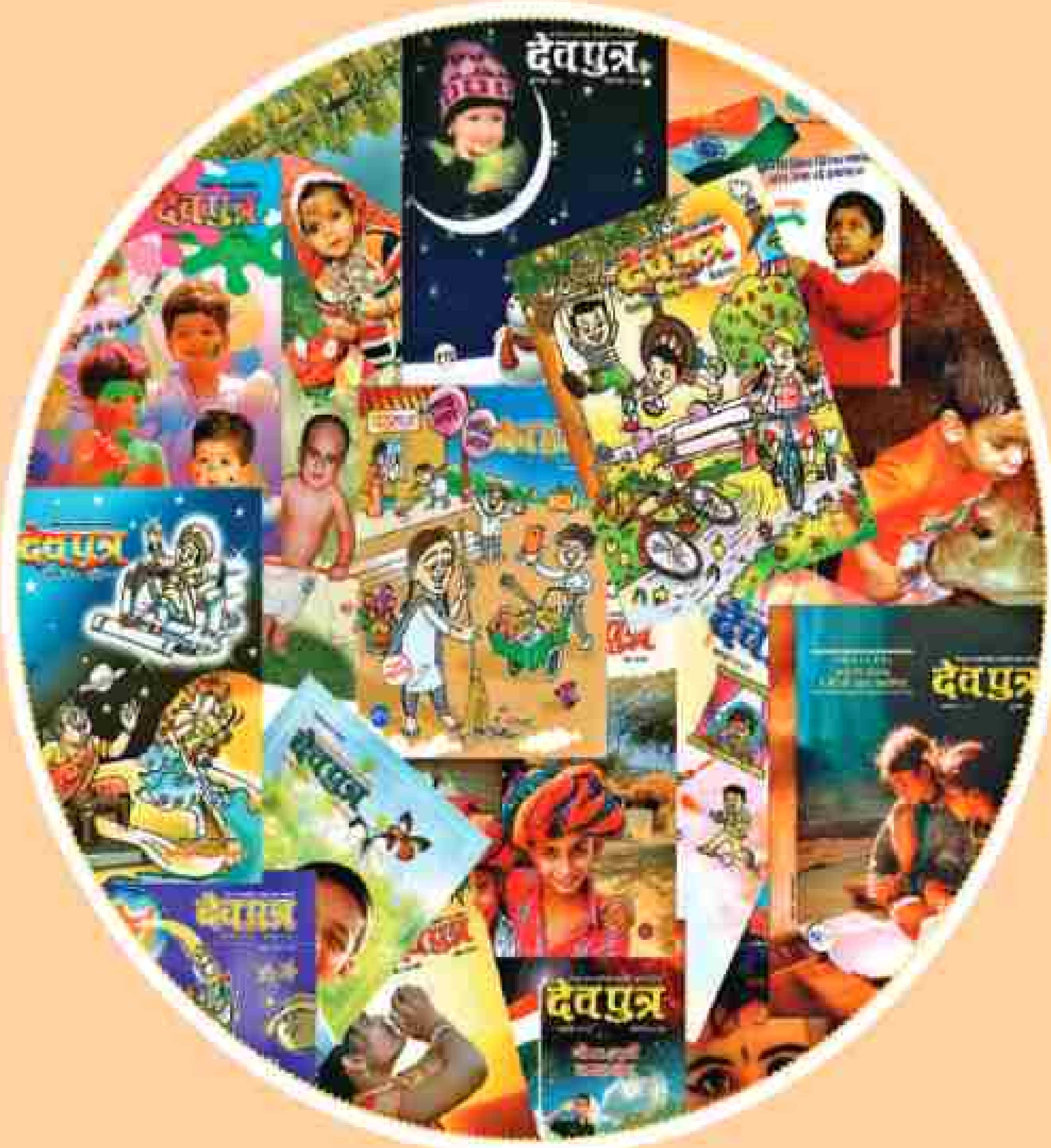

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी